मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

सहाबा से मुहब्बत की मांग

"मैं आपसे कहना चाहता हूं कि सहाबा–ए–किराम (रज़ि०) की मुहब्बत का, अक़ीदत का और उनके तज़किरों का, उनका नाम लेने का, उनकी तरफ़ निस्बत करने का हक़ है कि आप उनकी पूरी ज़िन्दगी अपने लिये नमूना बनाएं। यह नहीं कि सिर्फ़ उनकी तरफ़दारी में जोश में आ जाएं और मदह–ए–सहाबा का जुलूस निकालें, उनके नाम पर बड़े–बड़े जलसे करें, लेकिन अमल का जहां ताल्लुक़ है, ज़िन्दगी का ताल्लुक़ है, वह बिल्कुल उससे अलग!"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

NOV 18

₹10/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी

दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

शौक़-ए-आख़िरत

मौत के बाद रूहों की आपसी मुलाक़ात और बातचीत

''अन्सारी सहाबी अबू अय्यूब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स०अ० ने फ़रमाया कि जब मोमिन की जान क़ब्ज़ की जाती है तो अल्लाह तआला के मरहूम बन्दे बढ़ कर इस तरह (और इस इश्तियाक़) से मिलते हैं जिस तरह दुनिया में किसी ख़ुशख़बरी लाने वाले से मिलते हों। फिर कहते हैं कि अच्छा उसे ज़रा दम तो लेने दो कि दुनिया में यह सख़्त परेशानी में था और उसके बाद उससे पूछना शुरू कर देते हैं कि फ़लां मर्द का क्या हाल है और फ़लां औरत का क्या?क्या उस औरत ने दूसरा निकाह कर लिया?फिर अगर वह ऐसे शख़्स का हाल पूछते हैं तो जो उससे पहले मर चुका है तो वह जवाब में कह देता है कि वह तो मुझसे पहले ही मर चुका है, तो ''इन्नल्लाह'' पढ़कर कहते हैं कि बस तो उसे बुरे ठिकाने ले जाया गया है। (यानि दोज़ख़ को)

रूदाद आपने सुन ली! जब रूह बरज़ख़ में दाख़िल होगी तो इंशाअल्लाह अज़ीज़ों, दोस्तों, रफ़ीक़ों का एक गिरोह इस्तेक़बाल व ख़ुशआमदीद कहने को मिलेगा और दुनिया वालों का हाल लपक–लपक कर पूछेंगे कि फ़लां पर क्या गुज़री और फ़लां का क्या हाल है? और अगर किसी ने ऐसे का नाम ले दिया जो आपसे पहले गुज़र चुका तो आपको यही कहना पड़ेगा कि भई! वह तो मुझसे पहले ही यहां आ गया है।

''अरे'' और ''हाय'' कहकर वह ताज्जुब से इन्नल्लाह पढ़ेंगे और मायूस होकर यक़ीन कर लेंगे कि मालूम होता है कि वह हमसे छटकर कहीं दूसरे उस मरकज़ के हवाले हो गया जो ठिकाना ख़ुशनसीबों और ईमान वालों का नहीं, बल्कि बदनसीब मुनकिरों और काफ़िरों का है। आह! उस वक़्त के ख़ुश नसीब नजातयाब को मसर्रत का अंदाज़ा कोई बशरी दिमाग़ आज कर सकता है?

''और आप स०अ० ने यह भी फ़रमाया कि तुम्हारे आमाल तुम्हारे अज़ीज़ों और अहले ख़ानदान के सामने पेश किये जाते हैं जो आख़िरत में हैं। अगर यह अमल नेक हैं तो वह ख़ुश व बशशाश होते हैं और कहते हैं कि ऐ अल्लाह! तेरा फ़ज़्ल व रहमत है उस पर, सो अपनी हर नेमत उस पर पूरी कीजिए और उस पर उसको मौत दीजिए और उन पर जब गुनाहगार अमल पेश होता है तो कहते हैं कि ऐ अल्लाह! उसके दिल में नेक अमल डालियो जो सबब बन जाए तेरी रज़ा और तक़र्रुब का।

आज आपका लड़का या कोई और अज़ीज़ आपसे दूरे अलीगढ़ में, दिल्ली में, लखनऊ में, सहारनपूर में पढ़ता होता है और आपके पास इत्तेला आती है कि वह ख़ूब पढ़–लिख रहा है और अच्छी सोहबत में उठता बैठता है। बड़े शौक़ से अपने कामों में दिल लगाए हुए है तो आप क्या ख़ुश होते हैं और आपका दिल कैसा बढ़ जाता है। और इसके बरअक्स कहीं यह ख़बर आ गयी कि आपका लड़का या अज़ीज़ परदेस में आवारगी में पड़ गया है, वक़्त ज़ाया कर रहा है, पढ़ने–लिखने में बिल्कुल पीछे रह जाता है तो आपको कितनी तकलीफ़ होती है?कैसा गुस्सा आता है और दिल फट कर रह जाता है।

यह कैफ़ियत जब इस दुनिया की मामूली दूरी और मुसाफ़त में महसूस होती है तो इस आलम से उस आलम के फ़ासले के दरमियान इसका असर कई गुना बढ़ जाता है। आप यह कभी भी गवारा करेंगे कि आपके मां–बाप तक, आपके भाइयों तक, आपके कुल अज़ीज़ों, रफ़ीक़ों, बुज़ुर्गों तक आपके बारे में रिपोर्टें कुछ भी नाख़ुशगवार क़िस्म की पहुंची?

''सईद बिन जबीर ताबई कहते हैं कि जब कोई मरता है तो उसकी औलाद आलमे अरवाह में उसका इस तरह इस्तक़बाल करती है कि जैसे किसी बाहर गये हुए का इस्तेक़बाल उसकी वापसी के वक़्त किया जाता है।

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:११ नवम्बर २०१८ ई० वर्ष:१०

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष – दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुद्रक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

इस्लामी एकता.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इस्लाम – एक मुकम्मल दीन.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

असहाब–ए–कहफ़.....४
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

यहूदी साज़िशों की समझिये.....५
सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

अपने अन्दर बदलाव की चिन्ता कीजिए.....८
शमसुल हक़ नदवी

दुआ की अहमियत.....९
अब्दुल्लाह हसनी नदवी

त्याग तथा समानता क्या है?.....१०
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

ज़कात का महत्व.....१२
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

फ़िरऔन का अंजाम.....१४
अब्दुस्सुब्हान नाखुदा नदवी

मीडिया का गिरता स्तर.....१५
जनाब मुहम्मद अब्बास

वादा निभाना.....१८

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

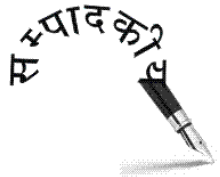

सम्पादकीय

इस्लामी एकता

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद स0अ0 के आने का बुनियादी मक़सद ही यही था कि सभी इन्सानों को एक अल्लाह की बन्दगी में लाकर एक लड़ी में पिरो दिया जाये। इसी एकता की ओर इशारा करते हुए आप स0अ0 ने फ़रमाया था: (तुम्हारा रब भी एक और तुम्हारा बाप भी एक) दूसरी जगह फ़रमाया: (तुम सब आदम की औलाद हो), रंग, नस्ल, ख़ानदान, बिरादरी और ज़बान व वतन के हर बुत को आप स0अ0 ने तोड़ दिया और इस तरह की सीमांए मिटाकर फ़रमाया: (किसी अरबी को किसी ग़ैर अरबी पर, किसी ग़ैर अरबी को किसी अरबी पर, किसी गोरे को काले पर और किसी काले को गोरे पर कोई बरतरी हासिल नहीं सिवाए तक़्वे के) जो जितना ज़्यादा अपने मालिक का फ़रमाबरदार होगा, उसके हुक्मों को पूरा करने वाला और उसके बन्दों के साथ अच्छा सुलूक करने वाला होगा वो अल्लाह के यहां बड़ा है।

आप स0अ0 ने इन्सानों को ऊंचा उठाया, मख़लूक़ के सामने हाथ फैलाने और सर झुकाने से उसको निकाल कर एक ख़ालिक़ के सामने सर झुकाने की शिक्षा दी। ग़ुलामी की जंजीरों को तोड़ कर दुनिया की नेमतें अता फ़रमायी। कमज़ोर वर्ग के लोगों को उठाकर मक्का के सरदारों की सफ़ में लाकर खड़ा कर दिया। मृत्यु से पहले हज़रत ओसामा बिन ज़ैद रज़ि0 को सेनापति बनाकर बता दिया कि हर प्रकार की ऊंच नीच ख़त्म की जाती है।

मानव एकता के ये वो उदाहरण हैं जो संसार के इतिहास में नहीं मिलते। इसी मानवीय एकता का परिणाम था कि दूसरी सदी शुरू होते होते वो लोग जिनको समाज में कोई दर्जा प्राप्त नहीं था और वो ग़ुलामी के बदतरीन दौर से गुज़र चुके थे, जगह–जगह फ़ज़ल व कमाल के इमाम बनकर चमके और दुनिया ने देखा कि इन्सानी समानता का जो पाठ दुनिया को दिया गया था उसने क्या असर दिखाया।

इस्लामी शिक्षांए रहती दुनिया तक के लिये हैं। जिस दीन में बड़ी बड़ी हद बन्दियां तोड़ दी गयीं हों, हर तरह की ऊंच–नीच ख़त्म कर दी गयी हो और जिसने अपने सभी मानने वाले को हर प्रकार की भ्रान्तियों से बचने का आदेश दिया हो वो आपस ही में एक दूसरे के सामने हो जायें और ज़रा–ज़रा सी बात पर आपस में दीवारें खड़ी कर दी जाएं और कोई एक दूसरे की बात सुनने का रवादार न हो, बहुत ही छोटी–छोटी बातों पर जहां मुनासिब और नामुनासिब के कोई दूसरा शब्द लाना ठीक न हो। जहां केवल सभ्य या असभ्य का मसला हो और वो अपना ख़ास तरीक़ा और अपने ख़ास शौक की बात हो, इस पर सब कुछ कर गुज़रना और दूसरे को नास्तिक समझ लेना और उसकी जान व माल और इज़्ज़त व आबरू के पीछे पड़ जाना, इसको सिवाए इन्तिहाई नासमझी के और क्या कहा जा सकता है?!! ये वो लोग हैं जो जानबूझकर या अनजाने में दीन के दुश्मनों की हाथ की कठपुतली बने हुए हैं।

जिस दीन के मानने वालों में हर तरह समानता मौजूद हो, रब भी एक, बाप भी एक, जिस रसूल की पैरवी करनी है वो भी एक, जिस किताब पर अमल करना है वो भी एक, शरीअत भी एक, व्यवस्था भी एक फिर इन समानताओं के बाद कब इस चीज़ की संभावना रह जाती है कि छोटी–छोटी बातों पर उलझा जाये। सीरत का नमूना सबके लिये है और रहती दुनिया तक के लिये है। वही सबके लिये प्रकाश का ऐसा स्तम्भ है कि आदमी उसकी रोशनी में स्वयं अपनी कमियां खोज सकता है। अपने ऐबों पर ध्यान दे सकता है। ये मोमिन का मिज़ाज होना चाहिये। उसको "मोमिन का आइना" कहा गया है। जब किसी दूसरे में कोई कमी नज़र आये तो आदमी उसे अपनी कमी समझे, चेहरे के दाग़ जो आइने में नज़र आते हैं वो खुद अपने चेहरे के होते हैं, आइने के नहीं होते! आज हम लोगों का हाल ये हो गया है कि अपनी आखों के शहतीर नज़र नहीं आते और दूसरों की आखों के तिनके भी नज़र आ जाते हैं। बिखराव के ज़माने में सबसे बड़ी ज़रूरत ये है कि एक दूसरे की ग़लतियों की अनदेखी की जाये। व्यक्तिगत रूप से भी सामूहिक रूप से भी। केवल सुधार के लिये जो कोशिशें हो सकें ज़रूर करें। ये ज़िम्मेदारों के लिये ज़रूरी है लेकिन बेज़रूरत किसी को सबके सामने बेइज़्ज़त कर देना बहुत गुनाह की बात है।

वर्तमान हालात में इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि एकता के लिये आधार खोजे जायें और ज़ाहिर है कि उसके लिये दो बुनियादें ऐसी हैं जिनसे कोई असहमत नहीं हो सकता है। एक अल्लाह की किताब और दूसरे अल्लाह के रसूल स0अ0 की बातें और आप स0अ0 का मुबारक तरीक़ा। इसका जितना गहराई से अध्ययन किया जायेगा फूट स्वयं ही समाप्त हो जायेगी। विभिन्न दृष्टिकोणों और विचारों के लिये एकता का यही रास्ता है।

इस्लाम – एक मुकम्मल दीन

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

इस्लाम एक मुकम्मल दीन और मुकम्मल निज़ाम–ए–हयात है और यह दीन अल्लाह की तरफ़ से उतारा गया है। इसको अक़्ल पर मस्लहतों पर और किसी मुल्क के माहौल पर नहीं छोड़ा गया वरना फिर यह होता कि हिन्दुस्तान का इस्लाम कुछ और होता मिस्र का कुछ और होता, सऊदी अरब का और होता, इंग्लैण्ड और अमरीका का दूसरा होता। इस्लाम का मॉडल दुनिया में अलग–अलग होते। आप आंख बन्द करके दुनिया के आख़िरी कोने तक चले जाइये, जहां मुसलमान हैं, 'नमाज़ का वक़्त आए' यही नहीं कि आप वहां नमाज़ पढ़ सकते हैं, बल्कि बेतकल्लुफ पढ़ा भी सकते हैं। कितने हिन्दुस्तानी हैं जो अरब मुमालिक में इमाम हैं। हमारे कितने मुदर्रिस अरब गये, फुज़्ला गये है, ख़ुत्बा देते हैं, हज करते हैं, वहां हज के तरीक़े बताते हैं। यह इस्लाम ही की ख़ुसूसियत है हम मराकिश गये, दमिश्क गये तो वहां यूनिवर्सिटयों की मस्जिद में जुमा के दिन हमसे नमाज़ पढ़ाने के लिये कहा गया। हमने वहां नमाज़ पढ़ाई, ख़ुत्बा दिया। हमें नहीं सोचना पड़ा कि यहां किस तरह नमाज़ पढ़ी जाती है और क्या–क्या करना पड़ता है। हमें नहीं पूछना पड़ा कि यहां ख़ुत्बा नमाज़ से पहले दिया जाता है कि बाद में।

एक बात और समझाना चाहता हूं कि इस्लाम जुग़राफ़ियाई तग़ययुर का क़ायल है न तारीख़ी तग़ययुर का। यह भी समझने की ज़रूरत है कि इस्लाम में ऐसी कोई तफ़रीक़ नहीं है कि एक तबक़े का दीन कुछ है और दूसरे तबक़े का दीन कुछ और है। क़दीन मुस्लिम घरानों का दीन कुछ और है और नये–नये इस्लाम में दाख़िल होने वालों का कुछ और है। दीने इस्लाम ही एक दीन है जो अल्लाह के रसूल स०अ० लेकर आये। यह दीन आलमी है। दायमी है। अबदी है और रूहानी व मक़ामी व तबक़ाती है। इस दीन में किसी के लिये किसी क़िस्म की छूट नहीं है। खुल्फ़ाए राशिदीन थे, सलातीन थे, हारून रशीद हों, आलमगीर हों, शाहजहां हों और कोई और बड़े से बड़ा बादशाह हो सबके लिये एक दीन था। वही फ़राएज़ वही अरकान वही इस्लामी तहज़ीब। सलाम सबका एक यानि अस्सलामु अलैकुम–वअलैकुमस्सलाम। यह नहीं कि आदाबे अर्ज़ कह दिया या हाथ उठा दिया। इस्लाम ने पूरी दुनिया के लिये एक नक़्शा बना दिया है। कुरआन मौजूद है, हदीस मौजूद है, सीरत मौजूद है, तारीख़ मौजूद है। मुसलमान चौदह सौ साल से उसी पर चल रहे हैं। यही दुनिया का तन्हा दीन है जिसकी शक्ल अब तक नहीं बदली है। दूसरे मज़हब वह मज़हब नहीं है जो हमारे पैग़म्बर लाये थे। अभी एक किताब शाये हुई है 'इस्लाम ऑर दि ट्रू क्रिश्चिनिटी' जिसका ताल्लकु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शख़्सियत से है। यह एक ईसाई की तस्नीफ़ है। इस किताब के मुसन्निफ़ ने भी एतराफ़ किया है कि मौजूदा क्रिश्चिनिटी सेंट पॉल की बनायी हुई है। रोमन मेथालिजी है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को सलीब पर लटकाया जाना या उसी तरह की दूसरी चीज़ें सेंट पॉल की गढ़ी हुईं हैं। अस्ली मसीहियत इस्लाम के मुताबिक़ थी। इसको तब्दील किया गया है। इस्लाम वाहिद मज़हब है जिसमें कोई रद्दोबदल नहीं की गयी। अपने ओरिजनल फ़ार्म में आज भी मौजूद है। हज़रत मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी रह० ने मुझे एक ख़त में लिखा था कि हिन्दुस्तान क़ौमों को खा जाने वाला है। यहां जो चीज़ पहुंचती है वह तहलील हो जाती हैं। अपनी अस्ल शक्ल खो देती है। यहां कितने ही ऐसे मज़ाहिब हैं जिन्होंने यहां घुल–मिल कर अपनी शक्ल को खो दिया। उनको पहचानना मुश्किल है। हिन्दुस्तान में आकर कुछ से कुछ हो गये। इस्लाम अल्हम्दुल्लाह अपनी पूरी शक्ल में मौजूद है। हम यहां से मुसमम इरादा करके उठें कि हम सौ फ़ीसदी मुसलमान सौ फ़ीसदी इस्लाम में दाख़िल हों। यह नहीं कि आधा इस्लाम हो और आधा अपने ज़माने का रस्म व रिवाज हो, मसलहतें हों, ज़माने के तक़ाज़ें हों। यह नहीं हो सकता कि हम यहां रहें तो यहां की क़ौमों की तक़लीद भी करें। इनका भी रंग कुबूल करें उनके हम रंग हो जाएं। जिस तरह दूसरे लोग ब्याह–शादी करते हैं हम भी करने लगें। फ़र्क़ व इम्तियाज़ बाक़ी रखना पड़ेगा। घरेलू ज़िन्दगी हो या तिजारत का मैदान, ज़राअत हो या सिनअत व हरफ़त, क़ानून हो या मुआशरती ज़िन्दगी, शादी–ब्याह की तक़रीबात हों या ग़मी की, हर मौक़े पर हमें यह देखना पड़ेगा कि इस्लाम क्या चाहता है। हमें किसी वक़्त भी मनमानी करने की इजाज़त नहीं है। हमारी नमाज़ें हमारी इबादतें और हमारा जीना–मरना सब अल्लाह के लिये है।

असहाब–ए–कहफ़

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

"और आप (उनको देखते तो) उनको जागता समझते जबकि वह सो रहे थे और हम उनको दाएं–बाएं करवट देते रहते थे और उनका कुत्ता दोनों हाथ फैलाए चौखट पर (बैठा) था। अगर आप उनको झांक कर देखते तो पीठ फेर कर भाग निकलते और निःसंदेह आपके अन्दर उनकी दहशत समा जाती।" (सूरह कहफ़: 18)

अल्लाह तआला ने असहाब–ए–कहफ़ की हिफ़ाज़त के वास्ते उनको सुला दिया था ताकि वे सुरक्षित हो जाएं और उन्हें हर समय चिंता न सताए। ज़ाहिर है कि अगर जगते रहते तो हर वक़्त डरते रहते कि कहीं कोई आ न जाए और उसी बात की तरफ़ ज़हन लगा रहता। अतः अल्लाह तआला ने उनके आराम की व्यवस्था कर दी ताकि वे सो जाएं और ऐसी नींद का इन्तिज़ाम किया कि पूरा युग बदल जाए। अर्थात उनके क्षेत्रवासी कुफ़्र से इस्लाम की ओर आ जाएं और वहां के अत्याचारी ख़त्म हो जाएं और वहां धर्म व सत्य के साथ हमदर्द लोगों का शासन हो जाए। ऐसा समय आने में तीन सौ साल से अधिक का समय लगा। इसके बाद वहां क्रान्ति हुई और वहां इस्लाम व ईमान वालों का शासन हो गया जोकि प्रजा–हितैषी शासन था। अल्लाह तआला ने उस समय उनको जगा दिया।

यक़ीनी बात है कि जो व्यक्ति इतनी लम्बे समय के लिये सोएगा तो उसके शरीर की आवश्यक वस्तुएं उसे नहीं मिलेंगी और वह शरीर बेकार हो जाएगा। लेकिन यही ईश चमत्कार (मोजज़ा) है कि है अल्लाह ने उसके बावजूद उनको स्वस्थ्य रखा और उनके शरीर की आवश्यकातओं को अल्लाह ने परोक्ष रूप से पूरा किया। इसीलिए ऊपर वर्णित आयत में कहा गया है कि तुम उनको समझोगे कि वह जाग रहे हैं, हालांकि वह सो रहे थे और हमने उनके लिये ऐसी व्यवस्था कर दी थी कि वह दाएं और बाएं करवट भी ले सकें इसलिए कि अगर शरीर एक ही जगह पर पड़ा रहता तो शरीर को नुक़सान पहुंचता। जागने का मतलब है कि वह इस तरह लेटे थे कि देखने वाला समझता यह जाग रहे हैं यानि अंदाज जागने वाला था, लेकिन वास्तव में वे आराम कर रहे थे। कई बार ऐसा होता है कि आदमी लेटा होता है और नींद नहीं आ रही होती है तो वह जाग रहा होता है और बिस्तर पर भी ऐसा मालूम होता है कि वह शख़्स जाग रहा होता है।

असहाब–ए–कहफ़ के साथ उनका कुत्ता भी था जिसके बारे में आता है कि वह अपने हाथ को फैलाए हुए बिल्कुल प्रहरी की भांति सामने बैठा था। यह कुत्ता भी सो रहा था लेकिन सोता हुआ लग नहीं रहा था। स्पष्ट है कि ऐसे कोई गुफ़ा में प्रवेश नहीं कर सकता। आदमी दूर से देखेगा तो सोचेगा कि यहां कुत्ता रहता है इधर न जाओ। मानो अल्लाह ने यह व्यवस्था कर दी कि कोई भूला भटका व्यक्ति भी उधर न आए। इसलिए कि ऐसी जगह पर जहां कोई आबादी न हो संभव है कि कभी कोई व्यक्ति शिकार के इरादे से निकले और उधर गुफ़ा तक आ जाए और फिर जब वह इन्सानों को देखे तो उनसे बात करने की भी कोशिश करे, लेकिन जब कुत्ते को दरवाज़े पर बैठा देखेगा तो समझेगा कि यह कुत्ते का घर है। उधर न जाओ। इस तरह यह बात ज़ाहिर नहीं होगी कि यहां कुछ लोग छिपे हैं और यूं भी कुत्ते को देखकर लोग समझेंगे कि यहां आदमी नहीं हो सकते। यह कुत्ते के रहने की जगह है। इसमें आदमी कहां बैठेगा।

आगे कहा गया कि उन लोगों का कुत्ता सुरक्षा की जगह पर हाथ फैलाए बैठा था। अगर तुम गुफ़ा तक पहुंच जाओ तो फ़ौरन भागोगे अर्थात भयभीत हो जाओगे क्योंकि कुत्ता इस तरह बैठा है और घूर रहा है कि कहीं आने वाले पर हमला न कर दे, इसलिए उसके क़रीब नही जाओगे और उसको देखकर रोब में आ जाओगे यानि कुत्ते की और उन लोगों के लेटे रहने की जो स्थिति है वह ऐसी है कि देखने में लग रहा है कि वे जाग रहे हैं और ऐसा लगता है कि इतने आदमी लेटे हैं और एक कुत्ता उनकी निगेहबानी कर रहा है। इसलिए यह दृश्य देखकर आदमी घबरा जाएगा।

अल्लाह तआला कहता है कि फिर हमने उनको जगाया, तो वह आपस में बात करने लगे और एक–दूसरे से पूछने लगे कि तुम कितने वक़्त यहां रहे? .

.....(शेष पेज 7 पर)

यहूदी साज़िशों को समझिये

मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

यहूदियों की फ़ितरत रही है कि वो जहां भी रहे साज़िशें रचते रहे और जिस देश में भी गये वहां विभाजन करते रहे। यहूदियों की इस फ़ितरत और हज़ारों साल पर आधारित उनकी इस रिवायत की बुनियाद पर उनसे ये उम्मीद नहीं की जा सकती कि वो कभी ख़ामोशी के साथ रहेंगे और विनाश नहीं फैलायेंगे। इतिहास गवाह है, कि उन्होंने अपने सबसे बड़े नजात दिलाने वाले हज़रत मूसा अलै0 के साथ भी साज़िश और सरकशी की। जबकि हज़रत मूसा अलै0 ने उनको फ़िरऔन के ज़ुल्म से नजात दिलायी और अल्लाह तआला से दुआ करके तरह–तरह की सुविधांए उनके लिये उपलब्ध करायीं।

इतिहास गवाह है कि अपनी शरारतों और ख़तरनाक साज़िशों की वजह से उन्हें दर–दर की ठोकरें खानी पड़ीं और अलग–अलग देशों में उन्हें पनाह लेनी पड़ी मगर वो फिर भी अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आये। जैसे 627ई0 में उनकी शरारतों की वजह से उन्हें हिजाज़ से निकाला गया। फिर उनकी एक बड़ी संख्यां ने शाम (वर्तमान सीरिया) में पनाह ली लेकिन वहां भी ये ख़ामोशी से न बैठे और अराजकता फैलाते रहे, परिणाम स्वरूप 890ई0 में वहां से उन्हें निकाल दिया गया। जिसके बाद उन्होंने पुर्तगाल में आबाद होना शुरू कर दिया, वहां भी उन्हें ज़्यादा दिन नहीं गुज़रे थे कि उनकी चालबाज़ियों को देखते हुए वहां से उन्हें निकलने पर मजबूर कर दिया गया। अतः 920ई0 में यहूदी वहां से फ़रार हो गये और स्पेन चले गये। स्पेन में उन्हें सुकून से रहने का मौक़ा मिला लेकिन जल्द ही उन्होंने इस मौक़े को भी गंवा दिया क्योंकि यहां भी ये विनाशकारी नीतियों में लग गये। स्पेन ने 110 ई0 में यहूदियों को अपने देश से बाहर कर दिया फिर ये अलग–अलग जगहों पर गये ताकि कहीं उनको पनाह मिल सके। वो इंग्लैन्ड भी गये, लेकिन 1290ई0 में वहां से भगा दिये गये और फिर वो फ़्रांस जा पहुंचे। फ़्रांस में जाकर भी उन्होंने अपनी पुरानी आदतों को दोहराया, जिसके कारण 1306 ई0 में उन्हें फ़्रांस से बाहर होना पड़ा। इसके बाद वो दर–दर की ठोकरें खाने लगे और किसी भी देश में ठिकाना तलाश करने लगे लेकिन किसी ने भी उनको पनाह न दी। यहां तक कि उन्होंने दोबारा फ़्रांस ही का रूख़ किया, लेकिन दोबारा फ़्रांस ने भी उन्हें न स्वीकार किया और 1334 एक बार फिर उन्हें देश से बाहर निकाल दिया। इसके बाद वो ठिकाने की तलाश में हालैण्ड गये, उसको अपना देश बनाने की कोशिश की, किन्तु अपनी नकारात्मक कार्यवाहियां जारी रखीं जिसके कारण हालैण्ड के शासन और वहां की जनता उनसे बहुत ख़फ़ा हो गयी और वहां से निकलने पर वो मजबूर हो गये। यहां से यहूदियों ने रूस का सफ़र किया। आरम्भ में तो उन्होंने स्वंय को रूस में जमाने की कोशिश की पर साथ ही साथ मक्कारियों को भी जारी रखा, आख़िरकार तंग आकर रूस ने 1510ई0 में उन्हें इटली की ओर खदेड़ दिया फिर जल्द ही 1540 में उन्होंने जर्मनी में पनाह ली। जर्मनी भी जल्द ही उनकी चालों को समझ गया और केवल ग्यारह साल की मुद्दत में उसने उन्हें धक्का दे दिया। अतः 1551 ई0 में वो वहां से निकल आये। वो किसी तरह 1551ई0 में वहां से निकल आये और तुर्की में ज़मी की हैसियत से बस गये। (तारीख़ बैतुल मुक़द्दस)

हर दौर और हर देश में उनकी साज़िशों पर आधारित हरकतों को देखकर कहा जा सकता है कि वो मध्य एशिया में शांति की स्थापना नही होने देंगे। भले ही अमरीका या इंग्लैण्ड या यूरोपीय बिरादरी उनसे अमन व सलामती की भीख मांगे। मध्य एशिया में शांति उसी समय संभव है जबकि यहूदियों के ख़िलाफ़ सख़्त क़दम उठायें जायें। और दुनिया की क़ौमें एक होकर या बड़े देश एक होकर उसके ख़िलाफ़ बड़ी कार्यवाही करें। सहयूनियों को नर्मी से समझाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। ये ध्यान रहना चाहिये कि इस्राईल को जितनी ढ़ील दी जायेगी वो उतना ही ख़तरनाक होता जायेगा और एक दिन दुनिया के लिये ख़तरा बन जायेगा। दुनिया के क़ौमें आगे आने वाले

ख़तरे को महसूस करें और समय रहते ठोस क़दम उठांये और दुनिया में शांति की स्थापना के लिये अहम रोल अदा करें।

हम यहूदियों ने ग़ैर यहूदी धार्मिक मार्गदर्शकों का वर्चस्व व विश्वास कम करने के और उनके धर्मों को नष्ट करने का प्रयास किया है, क्योंकि उनके मार्गदर्शकों का सम्मान और उनकी जनता का धर्म से लगाव हमारी मार्ग का बड़ा कांटा बन सकता है। दुनिया भर की जनता पर उनका प्रभाव दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा है। आत्मिक स्वतन्त्रता के नारे का स्वर ऊंचा कर दिया गया है और ईसाईयत कुछ सालों के भीतर पूरी तरह तबाही के किनारे पर पहुंच जाएगी। हम पादरी और पोप के विचारों को इतनी तंग सीमाओं में क़ैद कर देंगे कि धर्म अतीत के मुक़ाबले में तेज़ी से सिमटता चला जाएगा। जब पोप की अदालत को हमेशा के लिए समाप्त करने का समय आएगा तो उस समय एक अदृश्य हाथ अपनी उंगली से इस अदालत की ओर आकर्षित करेगा और लोग इस अदालत पर टूट पड़ेंगे, यहां तक कि उसकी ताक़त सम्पूर्ण रूप से समापन हो जाएगा।

यहूदियों का बादशाह सारी दुनिया का हक़ीर पोप होगा। इस दौरान जबकि हम नवजवान नस्ल को रिवायत पर आधारित नये धर्म की दोबारा शिक्षा दे रहे हैं और इसके बाद अपने धर्म से भी परिचित कराएंगे। हम खुल्लमखुल्ला मौजूदा गिरिजाघरों पर उंगली नहीं उठाएंगे बल्कि उनके विरुद्ध इस प्रकार की टिप्पणी करेंगे कि जिससे फूट व अविश्वास का वातावरण पैदा होगा, इस उद्देश्य के लिए हमारा पास सियासी मामलाता मज़ाहिब और ग़ैर यहूद की नाहिलियत पर आम तनक़ीद जारी रखेगा। इसलिये बहुत सख़्त शब्दों और इस्तलाह प्रयोग की जाएंगी। मक़सद ये कि हर मुमकिन तरीक़े से उनके वक़ार व सम्मान को समाप्त करना और ख़ाक़ में मिला देना है। इसी मन्सूबे को हमारे योग्य व ज़हीन लोग मंज़िल तक पहुंचाएगें।

हमारी सल्तनत (हिन्दुओं के) विष्णू देवता की तरह होगी जो सैंकड़ो हाथ रखते थे और यह हाथ सामाजिक जीवन के हर हिस्से पर हावी हो जाएंगे बल्कि उस साम्राज्य की महानता व ताक़त के सामने विष्णू देवता की उलूहियत भी कम होगी। हम सरकारी मिशनरी और कार्यकर्ता की सहायता के बग़ैर भी हर चीज़ को देख सकेंगे जिसके अख़्तियारों को हम ही ने ग़ैर यहूदियों के ख़िलाफ़ प्रयोग करने के लिए बढ़ावा दिया है। और अब वे अपनी युक्ति की राह में ऐसे बाधा बन जाती हैं कि वे वास्तविकता तक पहुंचने के योग्य नहीं रहती हैं। हमारे प्रोग्राम के अनुसार हमारी प्रजा का एक तिहाई हिस्सा कर्तव्य के बोध एवं कारसेवक के भाव से बाक़ी दो तिहाई हिस्से की कड़ी निगरानी करेगा। इस प्रकार एक जासूस या मुख़बिर होना ज़िल्लत की बात नहीं होगी बल्कि गर्व की बात होगी।

हम अपने एजेन्ट समाज के ऊंचे वर्गों से भी लेंगे और निचले वर्ग से भी। उनमें सरकारी ऐश से परे अफ़सर, सम्पादक, प्रकाशक, क्लर्क, सेल्समैन, मज़दूर, शिक्षक, और निचले वर्ग के नौकरीपेशा लोग शामिल होंगे। इन लोगों को ये अधिकार नहीं होगा कि वे स्वयं कोई कार्यवाही करें, बल्कि ये लोग केवल हालात का जाएज़ा लेंगे और समय पर सूचित करेंगे। उनके द्वारा उपलब्ध करायी गयी सूचनाओं की छान–बीन और उन पर कार्यवाही का दारोमदार व्यवस्था पर कन्ट्रोल रखने वाले एक अलग ज़िम्मेदार ग्रुप पर होगा।

जब हमारे लिए ख़ुफ़िया दिमाग़ को मज़बूत बनाने के लिए ठोस क़दम उठाने की आवश्यकता पड़ जाए तो हम दिखावे के फ़साद कराएंगे और बेचैनी फैलाएंगे और इस अवसर पर हमें आग उगलने वाले वक्ताओं और उनके भाषणों से अफ़रा–तफ़री का जो माहौल पैदा होगा उससे हमें लोगों की ख़ाना तलाशी के लिए जवाज़ हाथ में आ जाएगा। और ये काम भी ग़ैर यहूदी कार्यकर्ता अन्जाम देंगे।

हम दुनिया के सभी देशों में अधिक से अधिक संख्यां में फ्रीमेसन की संस्थाएं और उसके अन्तर्गत शाखें स्थापित करेंगे। ऐसे सभी लोगों को उसमें शामिल कर लिया जाएगा जो लोगों में नुमाया स्थान रखते हों या आगे महत्व प्राप्त करने वाले हों। दुनिया भर की इन सभी संस्थाओं को एक केन्द्रीय व्यवस्था के तहत लाया जाएगा जिसका ज्ञान हमारे सिवा किसी को भी न होगा। इन संस्थाओं (फ्रीमेसन लाज्ज़) के कार्यकर्ताओं में

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस के लगभग सभी एजेन्ट शामिल होंगे क्योंकि उनका काम इस लिहाज़ से हमारे लिए ज़रूरी है अवज्ञा करने वाले लोगों को सीधे रास्ते पर लाने के लिए ये पुलिस अपने ख़ास तरीक़ों का इस्तेमाल करती है। बल्कि ये हमारी कार्यवाहियों के लिए पर्दे का काम भी दे सकती है। और फूट व बिखराव पैदा करने के लिए अवसर भी तलाश कर लेती है।

ख़ुफ़िया तन्त्र में शामिल होने के इच्छुक लोग अधिकतर चालाकी से पैसा कमाने वाले लावबाली, बेफ़िक्र क़िस्म के लोग होते हैं। ऐसे लोगों को अपने उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करने में हमें कोई कठिनाई नहीं होगी। कुदरती बात है कि फ्रीमेशन की रहनुमाई सिर्फ़ हमें ही करनी चाहिए क्योंकि हमें इल्म होता है कि हम किस ओर मार्गदर्शन कर रहे हैं और हर तरह की कार्यवाहियों और जद्दोजहद का आख़िरी मक़सद भी हम ही जानते हैं। जबकि ग़ैर यहूद को किसी प्रकार का इल्म नहीं होता। बल्कि उन्हें तो किसी अमल के तुरन्त असर का भी असर नहीं होता। हमारे गुज़रे हुए मार्गदर्शकों ने उस समय कितनी दूरदर्शिता का प्रदर्शन किया जब उन्होंने एक संजीदा मक़सद (सारी दुनिया पर यहूदी वर्चस्व) प्राप्त करने के लिए कोई दक़ीक़ा फ़रोगाश्त नहीं किया। इस बात की भी परवाह नही करनी चाहिए कि इसके लिए कितनी जानें कुर्बान करनी पड़ती हैं जबकि हमने भी कुर्बानियां दी हैं लेकिन इस सिलसिले में ग़ैर यहूदी मवेशियों (ग़ैर यहूदी इन्सान नहीं मानों मवेशी हैं) की जाने जितनी काम आयीं हैं, हमने उनकी संख्यां का हिसाब लगाने की भी आवश्यकता नहीं समझी, जबकि दुनिया में हमने अपने शहीदों को वो पोज़ीशन दिला दी है जिसके बारे में वे सोच भी नहीं सकते थे।

हमारे और जो यहूदी नहीं हैं उनके बीच सोच विचार की क्षमता का यही अन्तर हमारे "ख़ुदा की महबूब क़ौम" (बिवेमद च्मवचसम) होने और श्रेष्ठतर मानवीय योग्यता होने की श्रेष्ठता है जो इससे साफ़ प्रकट है कि प्रकृति ने दुनिया का नेतृत्व और हुक्मरानी हमारी क़िस्मत में लिख दी है।

शेषः **असहाब-ए-कहफ़**

..... ज़ाहिर है कि उन्हें एहसास हो गया था कि वह लम्बी उम्र तक सोए हैं और उनका ज़हन भी यहीं तक जा सकता था कि हम दिन भर और रात भर सोए हैं। इससे ज़्यादा उनका ज़हन क्या जाता। इसीलिए उन्होंने आपस में कहा; मालूम होता है कि हम एक दिन या दिन का बड़ा हिस्सा सोए हैं और फिर यह भी उन्होंने कहाः हम ख़ुद फ़ैसला नहीं कर सकते, अल्लाह को ज़्यादा मालूम है कि हम कितनी देर तक इस गुफ़ा में रहे हैं।

इस छोटी सी बातचीत के बाद उन्हीं में से किसी ने कहा; यह बात छोड़ो अल्लाह जानता है कि हम कितना सोए। वास्तव में हम यहां छिपने आए हैं, तो ठीक है कि कम सोएं हों या ज़्यादा, क्या फ़र्क़ पड़ता है। इस समय भूख लगी है, अतः कुछ खाने की व्यवस्था होनी चाहिये। अतः उन्होंने अपने एक व्यक्ति को चांदी के सिक्के दिये और बाहर से खाने का सामान मंगाया। चांदी के सिक्के के लिये "वरक़" का शब्द आया है। उस समय सिक्का साधारणतयः चांदी का होता था। सिक्का चांदी और सोने दोनों का होता है लेकिन सस्ता सिक्का चांदी का होता है और मंहगा सोने का होता है इसलिए वरक़ का जो शब्द प्रयोग किया गया है उससे प्रतीत होता है कि वह चांदी का सिक्का था। अतः उन्होंने अपने साथी से कहा; इस सिक्के को ले जाओ और कुछ ख़रीद लाओ और इस बात का ख़्याल रखना कि पाकीज़ा खाना लाना हराम न लाना, इसलिए कि कुफ़्फ़ार का माहौल है। वहां हराम व हलाल का अन्तर नहीं है, इसलिए वह खाना लाना जो ज़्यादा पाकीज़ा हो। और जाते समय बहुत सावधानी से काम लेना कि किसी को पता न चले कि तुम कौन हो और कहां से आए हो? इसलिए कि अगर उनको पता चल गया और वे तुम्हें पहचान गये तो ध्यान रहे कि वह लोग तुम्हें पत्थर मारेंगे और तब तक मारेंगे जब तक तुम्हारी जान न चली जाए या तुमको अपने धर्म में वापस ले आएंगे और फिर तुम कभी भी कामयाब नहीं हो सकते यानि अगर तुम अल्लाह के दीन से हट जाओगे तो बर्बाद हो जाओगे और अगर नहीं हटोगे तो वे लोग तुमको मारकर तुम्हारी हत्या कर देंगे।

अपने अन्दर बदलाव लाने की चिन्ता कीजिए!

मौलाना शमसुल हक़ नदवी

यह बहुत साधारण बात है। हर आम व ख़ास इसको जानता है कि जब बुख़ार या किसी और बीमारी के कारण मुंह का मज़ा (स्वाद) बिगड़ जाता है तब अच्छे से अच्छा खाना भी बुरा लगता है। खाना तो दूर की बात अक्सर उसकी बात करने या गंध से भी उल्टी आने लगती है। यदि किसी क्षेत्र में मलेरिया की बीमारी फैल जाए और उसके मरीज़ों की संख्या बढ़ जाए और सब एक ज़बान में कहना शुरू कर दें कि हमारे शहर से ऐसे सभी खाद्य पदार्थों को फेंक दिया जाए जिनको पुराने विचारों के लोग पसंद करते हैं और उनको अच्छा व स्वादिष्ट बताते हैं तो क्या शहर के वैध व डॉक्टर और सेहतमन्द लोग उन मरीज़ों की बात मान लेंगे?क्या उस शहर के स्वास्थ्य विभाग वाले उन मरीज़ो की बात को सुनेंगे? और यदि सुने व उन पर कार्यरत हों तो क्या यह न कहा जाएगा कि उनकी अक्लों पर पत्थर पड़ गया है?बहुसंख्यकों व माहौल के बदलाव ने उनकी ऐसी नज़रबन्दी कर दी है कि वे अपना ज्ञान व अनुभव सबकुछ भूल गये हैं। हमारी आज की दुनिया का कुछ ऐसा ही हाल हो रहा है। नयी सभ्यता के अधीनस्थों ने दिमाग़ों को इतना बिगाड़ दिया है कि हर सीधी चीज़ टेढ़ी और टेढ़ी चीज़ सीधी नज़र आ रही है जिसके परिणाम में हमारे समाज व सोसाइटी की कोई चूल सीधी नहीं रह गयी है। हमारे प्रचार–प्रसार के साधनों व मीडिया ने मासूम बच्चों से लेकर नवयुवकों व बूढ़ों तक के दिमाग़ों का सांचा ऐसा बदल दिया है कि मुहब्बत व शराफ़त, हमदर्दी व मानवता की सेवा का भाव की जगह तंग मिज़ाजी, नफ़रत व दुश्मनी, मारपीट व लूटपाट व अश्लीलता ने ले ली है जिसका परिणाम यह है कि मनुष्य सांप, बिच्छू, भेड़ियों व दरिन्दों को मात दे रहा है। मनुष्य को इस प्रकार मारा, जलाया व मौत के घाट उतारा जा रहा है, जिस प्रकार से ख़तरनाक जानवरों को मारने की स्कीम चलायी जाती है। दुनिया के विभिन्न देशों व क्षेत्रों में रंग व जाति के आधार पर होने वाले ख़ून ख़राबे के अतिरिक्त मनुष्य कितनी बेदर्दी के साथ छोटी–छोटी बातों पर मनुष्य को मार रहा है। कौन सा दिन गुज़रता है जिसमें नदी, नालों या खेतों में लाशों के मिलने की ख़बर न आती हो और यह वे हैं जो प्रेस में आ गयीं, ऐसी कितनी घटनाएं होंगी जो क्षेत्रीय लोगों के अतिरिक्त किसी और को न मालूम हों। बात यहां तक पहुंच गयी है कि मालिक यदि अपने परिवार के लोगो के साथ बैठकर टेलीविज़न देख रहा है और नौकर को उस समय किसी काम के लिये भेज देता है और उसको टीवी देखने का अवसर नहीं देता तो टीवी पर दिखाये जाने वाले क़त्ल व हत्या के दृश्यों ने उसे ऐसा आतंकी बना दिया है कि वह बेझिझक अपने मालिक को और उसके परिवार को अपनी गोलियों का निशाना बना देता है।

हमारी यह मीडिया फ़ायदे से अधिक नुक़सान पहुंचा रही है। मानवता का पाठ पढ़ाने के बजाए दरिन्दगी व अमानवीयता का प्रचार कर रही है। लेकिन किसी की हिम्मत कि उसकी आलोचना करे। उसकी हानियों के बारे में बताए। कौन है जो कहे कि भाइयों! तुम्हारे मुंह का मज़ा बदल गया है। तुम्हारी नज़रबन्दी कर दी गयी है। तुम अपना इलाज करो। स्वास्थ्य विभाग के लोगो की सलाह मानो। डॉक्टरों को जुनूनी व पागल मत समझो वरना तुम सब तबाह व बर्बाद हो जाओगे।

यह काम केवल नबी अलैहिस्सलाम (ईश्वर के संदेष्टा) का होता है कि वह पूरी मानवता का आत्मिक वैध व उपचारक होता है। जब से दुनिया बसी है उस समय से बराबर यह होता आया है कि जब भी मनुष्य की प्रकृति में बिगाड़ पैदा हुआ है तो .....(शेष पेज 17 पर)

दुआ की अहमियत

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

कुरआन की आयतें और हदीस के भण्डार दुआ व मुनाजात की अहमियत महत्व और आवश्यकता से भरे पड़े हैं। इसीलिये हमारे बुजुर्गो ने दुआ का इहतिमाम किया। उनके दिन व रात दुआ व मुनाजात से भरे और उनके ज़बाने दुआ के कलिमों से तर रहती थीं।

आज दुआओं का जो सरमाया हमारे पास है वह हमारे बुजुर्गों के एहतिमाम और ताल्लुक़ का नतीजा है। सहाबा किराम रज़ि0 ने हुज़ूर अकरम स0अ0 की मुबारक ज़बान से जो दुआंए सुनी थीं वह अपने बाद वालों को बिना किसी कमी के हवाले कर दीं। इस तरह ये भण्डार हम तक बग़ैर किसी कांट–छांट के पहुंच गया और क्योंकि ये वो दुआंए हैं जो अल्लाह के सबसे मक़बूल (स्वीकार्य) बन्दे, अल्लाह के महबूब ने अपनी ज़बान से अदा फ़रमायी हैं इसलिये उन्हीं शब्दों का प्रयोग दूसरे शब्दो से बहुत हद तक श्रेष्ठ है और दुआओं के कुबूल होने का ज़मानतदार है और उन शब्दों के पढ़ने से जो सवाब और बरकत है वह और बेहरत हैं।

दुआ बन्दगी और बन्दे होने का निशान और आजिज़ी व इन्किसारी का इज़हार है। दुआ इबादत की रूह और उसका निचोड़ है। दुआ मोमिन का हथियार और उसकी ढ़ाल है। दुआ अल्लाह के ख़ज़ाने की कुन्जी और अल्लाह की रहमत का साधन है। दुआ मग़फ़िरत का ज़रिया और तौबा की कुबूलियत का दरवाज़ा है। ग़रज़ दुआ हर मर्ज़ की दवा और हर दर्द का इलाज है। इसीलिये फ़रमाया गया कि जो उससे मांगे वह उससे राज़ी होता है और जो न मांगे उससे नाराज़, और फिर मांगे तो इस तरह मांगे कि देने वाली ज़ात सिर्फ़ उसी की है। मायूसी न हो, मांगे और मांगता चला जाये, न मांगने से थके और न उसकी शाने रहीमी व करीमी से उसकी निगाह हटे। आज नहीं तो कल मिलेगा, ज़रूर मिलेगा। लेकिन हिकमत व मसलहत के तक़ाज़े से कुछ देर हो सकती है। जो हक़ीक़त में हमारे लिये ही ख़ैर की वजह होगी।

दुआ इस भौतिक दौर में रूहानियत का चिराग़ है। इस ख़ुदा फ़रामोशी बल्कि ख़ुद फ़रामोशी के ज़माने में याद दहानी और स्मरण का बहुत बड़ा साधन है। इसलिये आज बहुत से मजमूओं के ज़रिये दुआ का माहौल बनाने की ज़रूरत है ताकि उसकी बरकतों से पूरी इन्सानियत को नफ़ा पहुंचे और उसके ज़रिये दुनिया व आख़िरत की कामयाबी व ख़ुशहाली नसीब हो।

उलमा व मशाएख़ ने अपने अपने ज़ौक़ व अनुभव के अनुसार दुआओं के मजमूए तैयार किये। आरम्भिक सदियों से लेकर आज तक ये जारी है। न मालूम कितने अल्लाह के बन्दे उन दुआओं के संग्रह से लाभान्वित हुए और अल्लाह की बारगाह में उनके ज़रिये क़रीब हो गये। रसूलुल्लाह स0अ0 ने अलग–अलग वक़्तों की अलग–अलग दुआएं बातयी हैं। जमाने की छूट, हालत व तक़ाज़े का लिहाज़, मज़ाज व ज़ौक़ जैसी भिन्नताओं को सामने रखने से दुआओं में भी भिन्नता पायी जाती है। सोने की बहुत सी दुआंए हैं। छोटी भी हैं और बड़ी भी हैं। ख़ास भी है और आम भी हैं। जिसका जो मिज़ाज हो और जिसके लिये जितना आसान हो वह उस पर अमल कर सकता है।

दुआ करना और अपने अल्लाह से मांगना अल्लाह वालों का बहुत महबूब और पसंदीदा अमल रहा है और क्यों न हो, क्यों कि अल्लाह तआला को भी अपने बन्दों का ये काम बहुत पसंद है। बल्कि जो उससे न मांगे उससे वो नाराज़ होता है जिसको अल्लाह तआला दुआ की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देता है उसको जीने का सलीक़ा आ जाता है। आख़िरत के लिये काम करना आ जाता है और तरक्क़ी की राह दुआ की तौफ़ीक़ व दुआ की किफ़ायत के अनुसार बढ़ा दी जाती हैं। अल्लाह तआला तौफ़ीक़ और ख़ास फ़ज़ल से हम सबको ये नेमत अता फ़रमाये।

लेकिन ये चीज़ उम्मत के लोगों में कमज़ोर होती जा रही है। इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। बल्कि अल्लाह के अलावा औरों से मांगना, फ़रियाद करना, कब्रों पर जाकर पड़े रहना, उनको हाजत रवा, मुश्किल कुशा, और काम बनाने और बिगाड़ने वाला जानना जो खुला हुआ शिर्क है। मुसलमानों में बहुत आम हो रहा है । अल्लाह तआला तौबा की तौफ़ीक़ दे और तौहीद के अक़ीदे को अपनाने की तौफ़ीक़ से नवाज़े जिसका एक मज़बूत ज़रिया अल्लाह तआला से दुआ मांगना है। इस तरह कि उससे दुआ करना उन विशेषआतों के साथ जो उसने ख़ुद अपने लिये साबित किये हैं ये चीज़ मक़बूल दुआओं को समझकर पढ़ने से हासिल हो जाती है।

त्याग व समानता क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

समानताः समानता भी त्याग का ही एक हिस्सा है यानि दूसरे का दुख बांटना। किसी को आपने दुखी देखा तो उसका दुख आपके दिल में पैदा हो। समानता स्वार्थ का विलोम है। इसमें तो केवल आदमी को अपना ही नज़र आता है। हम बीमार हैं, हम परेशान हैं, मनुष्य इसी चक्कर में रहता है कि हमारी ज़रूरत पूरी हो चाहे वह अमीर हो अथवा ग़रीब हो। ग़रीब समझता है कि जो मिलना है वह हमें मिलें, हम ज़्यादा हक़दार हैं। अमीर सोचता है कि जितना आ रहा है ज़्यादा हमारे पास आए, यह स्वार्थ होता है। लेकिन समानता अर्थात दुख बांटना यह है कि अमीर हो या ग़रीब जब किसी ज़रूरतमन्द को देखे, कमज़ोर को देखे, बूढ़े को देखे तो दिल के अन्दर एक दर्द पैदा हो कि हम उसके काम आ जाएं। यह बेचारा ज़रूरतमन्द है। कभी किसी के यहां कोई हादसा हो गया, कोई परेशानी में पड़ गया। अब आप यह सोचें कि यह तो बहुत बेवक़्त हादसा पेश आया है, इस वक़्त कौन जाए। अभी नींद आ रही है तो यह स्वार्थ है। लेकिन आपने सोचा कि वह इस वक़्त ज़रूरतमन्द है। उसके पास जाना चाहिये और आप वहां गये। आपने हमदर्दी के बोल बोल दिये तो इसका नाम समानता है। हदीस में आता हैः

"जो ऐसी औरत को जाकर सांत्वना दे जिसके बच्चे का इन्तिक़ाल हो गया हो (उसको दिलासा दे और सुकून का सामान करे) तो अल्लाह तआला ऐसे शख़्स को जन्नत का लिबास पहनाएगा।" (सुनन तिरमिज़ीः 1097)

ज़ाहिर है कि जन्नत का लिबास पहनाने से जन्नत में दाख़िल करना मुराद है। अर्थात किसी दुखी को जाकर तसल्ली दे देना भी त्याग व समानता है।

दुख बांटने का महीनाः हदीस में आता है कि रमज़ान का महीना "शहरु रमज़ान" है यानि दुख बांटने का महीना है। लेकिन बहुत से लोग इस महीने को सिर्फ़ इस हैसियत से जानते हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत की। नफ़िल नमाज़ों की संख्या बढ़ाई जाए। बेशक यह भी ज़रूरी है और इसमें कोई शुब्हा नहीं है कि कुरआन मजीद की तिलावत सबसे ज़्यादा मुबारक काम है। इसलिए कि कुरआन का रमज़ान के महीने से विशेष संबंध है। इस महीने में नमाज़ कसरत से पढ़ी जाए, ज़िक्र किया जाए, दुआएं भी मांगी जाएं। लेकिन इस महीने में एक बहुत बड़ा काम है जिसकी ओर ध्यान नहीं जाता है और वह है समानता। रसूलुल्लाह (स0अ0) इस महीने को "शहरु मसावात" कहा है यानि ज़रूरतमंदो के साथ हमदर्दी करना। अच्छे बोल बोल देना। इसमें आप जो वक़्त इस्तेमाल करेंगे वह समय ख़राब नहीं हो रहा है बल्कि बल्कि बहुत क़ीमती हो रहा है और अल्लाह तलाआ के यहां कुबूलियत की बात है कि वह किसको कुबूल कर ले। न जाने कितनी इबादतों, तिलावतों पर हमारे दो बोल भारी जाएं।

श्रेष्ठ इबादतः हज़तर इब्ने अब्बास रज़ि0 की रिवायत है कि वह मस्जिद में मोतकिफ़ थे। उनके पास एक ज़रूरतमन्द आए। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 ने पूछाः कुछ दुखी नज़र आ रहे हो क्या बात है?कहाः अल्लाह के रसूल स0अ0 के चचा के बेटे! मेरे ऊपर फ़लां का क़र्ज़ है तथा मेरी अदा करने की सामर्थ्य नहीं है और वह मांग रहा है, समझ में नहीं आता कि क्या करूं?हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 ने फ़रमायाः मैं तुम्हारी कुछ मदद करूं या मैं उससे सिफ़ारिश करूं? उस व्यक्ति ने कहा कि आप जैसा उचित समझें। अतः हज़रत अब्बास एकदम मस्जिद से बाहर जाने लगे, उस व्यक्ति ने कहाः अल्लाह के रसूल स0अ0 के चचा के बेटे! आप मोतकिफ़ हैं? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 ने कहाः मुझे मालूम है, मुझे याद है, लेकिन कितनी लम्बी मुद्दत की इबादतों से ज़्यादा बेहतर यह है कि आदमी किसी की तकलीफ़ दूर करे, उसकी ज़रूरत पूरी कर दे, उसके साथ उसके दुख बांटे, यह मुबारक काम न जाने कितने सालों के एतकाफ़ से बेहतर है। (शोएबुल ईमानः 3965)

इससे अंदाज़ा होता है कि सारी इबादतें यक़ीनन अल्लाह की रज़ा का ज़रिया हैं। अतः हमें इसी प्रकार व्यस्त होना है लेकिन कुछ समय समानता में भी लगाया जाए। कम से कम इसकी चिंता की जाए कि शायद ख़िदमत का कोई मौक़ा हमें भी मिल जाए। किसी के साथ

भलाई करने का कोई मौक़ा मिल जाए। दुख बांटने का कोई मौक़ा मिल जाए। अगर हमारे सामने कोई व्यक्ति परेशान बैठा है तो हम मालूम करें कि क्या बात है?मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं? अल्लाह तआला को यह गुण बहुत प्यारा है, बहुत पसंद है।

समाज के बिगाड़ का हलः त्याग व समानता का यदि हमारा स्वभाव हो जाए तो यह जो समाज का बिगाड़ है, जिसको दूर करने के लिये मेहनतें हो रही हैं। लिट्रेचर छप रहा है। भाषण हो रहे हैं। यह सब ठीक हो जाएगा। आज आदमी जहेज़ की मांग स्वार्थ के कारण ही कर रहा है। यदि उसके स्वभाव में त्याग की भावना होती तो वह दहेज की मांग नहीं करता बल्कि वह ख़ुद कहता कि मैं ख़ुद देने को तैयार हूं, आप ग़रीब हैं, आप चिन्ता न करें, आप बस अपनी बेटी को विदा कर दें, हमें कुछ नहीं चाहिये।

इस बारे में त्याग करने वालों ने ऐसे त्याग किये हैं कि आश्चर्य होता है। इतिहास में इसके उदाहरण उपस्थित हैं।

त्याग का ऐतिहासिक उदाहरणः सैयदुत्ताइबीन हज़रत सईद बिन मुसय्यब रह0 की एक अजीब व ग़रीब घटना है। उनके एक शिष्य की पत्नी की मृत्यु हो गयी, जिसके कारण से वह दर्स में नहीं आ सके। जब अगले दिन आये तो शेख़ ने पूछाः क्या बात है, कल अनुपस्थित होने का क्या कारण था?शिष्य ने बताया कि मेरी पत्नी बीमार थी, कुछ की दिन पहले मेरी शादी हुई थी और उनकी मृत्यु हो गयी। इस घटना से उनको बहुत सदमा हुआ। शेख़ ने शिष्य को तसल्ली दी और कहाः तुम परेशान न हो, अल्लाह तुमको इसका बेहतर बदला अता करेगा। कुछ ही दिन बीते थे कि शेख़ ने कहाः अब तुम दूसरी शादी कर लो। शिष्य ने कहाः मैं ग़रीब आदमी हूं, मुझसे कौन शादी करेगा। मैं कहां से इन्तिज़ाम करूंगा। एक शादी तो बड़ी मुश्किल से हुई थी। शेख़ ने कहाः इन्तिज़ाम भी हो जाएगा। कुछ दिन बाद शेख़ ने कहाः मेरी बेटी मौजूद है, मैं चाहता हूं कि तुमसे उसकी शादी कर दूं। वह कहने लगेः हज़रत! मैं इस क़ाबिल कहां!! ज़ाहिर है कि वह आली ख़ानदान से थे, इल्म का पहाड़ थे, सैयदुत्ताइबीन थे, अल्लाह ने सारी दौलत दे रखी थी और यह शिष्य एक मामूली ख़ानदान से थे और अभी छात्र ही थे। इसलिए उनको हैरत व आश्चर्य भी हुआ और यक़ीनन दिली ख़ुशी भी होगी। मगर उनके समझ में बात न आयी। अतः कहने लगेः मैं इस क़ाबिल कहां! शेख़ ने फ़रमायाः ऐसा कुछ नहीं है, मेरा ख़्याल है कि इसी महफ़िल में निकाह हो जाए। शिष्य ने कहाः मैं अभी अपनी माँ से पूछ लूं। जब मां से पूछा तो उन्होंने कहाः हम पहले कुछ इन्तिज़ाम कर लें और घर ठीक कर लें इसके बाद यह निकाह कर लेंगे। शेख़ ने कहाः ऐसा करो कि निकाह अभी कर लो और रुख़्सती बाद में हो जाएगी। अतः निकाह हो गया और यह सोचा कि चार–पांच दिन बाद घर तैयार हो जाएगा तो रुख़्सती भी हो जाएगी, लेकिन जब शिष्य रात को घर गये और बिस्तर पर लेटने लगे तो किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी। उन्होंने दरवाज़ा खोला तो देखा कि हज़रत सईद बिन मुसय्यब मौजूद हैं। शिष्य ने कहाः हज़रत! आप इस समय यहां?शेख ने कहाः मुझे ख़्याल आया कि तुम्हारा निकाह हो चुका है। अब तुम रात में क्यों अकेले रहो। अतः मैं अपनी बेटी ले आया हूं, तुम इसको अन्दर ले जाओ और दोनों एक साथ रहो।

समाज की एक महत्वपूर्ण आवश्यकताः बात यह है कि यह त्याग की पराकाष्ठा है। ऐसा कौन कर सकता है?ज़ाहिर है कि अगर त्याग होगा तो क्या शादियों में फ़िज़ूल ख़र्ची होगी। क्या आदमी दहेज की मांग करेगा। क्या किसी दूसरे का हक़ मारेगा। वह तो इस उम्मीद में रहेगा कि मेरा जो हक़ है वह हम कैसे अदा करें और यह दीन का स्वभाव है। दीन यही मिज़ाज बनाना चाहता है कि आदमी हक़ देने वाला बने। हमेशा हक़ लेने वालों में से न बनें कि हर वक़्त बस यही मांग करे कि हमारा हक़ हमको दिया जाए। आज हम लोगों का मिज़ाज बिगड़ गया है। हर एक से अपने हक़ मांगा करता है। कभी हुकूमत से, कभी किसी से। सोचने की बात है कि हमने अपने को क्यों इस क़द्र गिरा लिया है और दीन से दूर कर लिया है कि हम यहां तक पहुंच गये कि हाथ ही फैलाना हमारा काम रह गया है। अगर हमारा त्याग व समानता का स्वभाव बनता है तो ऐसा स्वभाव बन जाता है कि परिस्थिति बिल्कुल भिन्न होती। इसलिए इस बारे में हमें अपना जायज़ा लेने की ज़रूरत है। अपने हालात को बनाने की ज़रूरत है।

ज़कात का महत्व
और उसके कुछ मसले

मुफ्ती राशिद हुसैन नदवी

ज़कात इस्लाम का एक ज़रूरी हिस्सा है। कुरआन पाक में जगह–जगह नमाज़ के साथ ज़कात देने पर भी ज़ोर दिया गया है। और बहुत सी जगह पर अलग से भी उसकी फ़ज़ीलत और न अदा करने पर वईद सुनाई गयी है। इसकी फ़ज़ीलत का ज़िक्र करते हुए बताया गया कि ज़कात व सदक़े अदा करने से सात सौ गुना बल्कि इख़्लास हो तो उससे भी ज़्यादा अज्र व सवाब मिलता है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "उन लोगों की मिसाल जो अपने मालों को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं उस दाने की तरह है जो सात बालियां उगाए और हर बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसके लिये चाहता है ख़ूब बढ़ोत्तरी कर देता है।"

हदीसों में भी कसरत से ज़कात व सदक़े की फ़जीलत आयी है। कुछ हदीसें देखिये:

1– हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: जो शख़्स हलाल कमाई से एक खजूर के बराबर सदक़ा करता है और अल्लाह तआला सिर्फ़ हलाल माल ही कुबूल करता है, तो अल्लाह तआला अपने दाहिने हाथ से उसे कुबूल करता है फिर अल्लाह तआला उसको इस तरह बढ़ाता रहता है जिस तरह से तुममें से कोई अपने घोड़े के बच्चों को बढ़ाता और परवरिश करता है। यहां तक कि वह खजूर पहाड़ के बराबर हो जाती है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

2– हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 की एक लम्बी रिवायत में यह जुम्ला भी है कि जो शख़्स सदक़ा व ज़कात अदा करने वाला होगा उसको जन्नत में एक ख़ास दरवाज़ा "बाबुस्सदक़ा" से दाख़िल किया जाएगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

3– एक हदीस में रसूलुल्लाह स0अ0 का इरशाद नक़ल किया गया है कि सात तरह के लोग हश्र के मैदान में अल्लाह तआला की ख़ास रहमत के साये में होंगे। उनमें एक शख़्स वह होगा जो अल्लाह के रास्ते में छिपा कर ख़र्च करता था यहां तक कि उसके बाएं हाथ को भी ख़बर नहीं होती थी कि उसके दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

4– मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में कहा गया कि सदक़ा क़यामत के दिन हुज्जत होगा।

सदक़े से माल बढ़ता है:

ज़कात न अदा करने का एक बड़ा बल्कि मूल कारण यह माना जाता है कि इससे माल की एक बड़ी मात्रा हाथ से निकल जायेगी और उसके बदले में कोई चीज़ नहीं मिलेगी। लेकिन कुरआन मजीद में इस ख़्याल की काट की गयी है और इस पर पूरी तरह से संतुष्ट किया गया है कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से माल घटता नहीं है, बल्कि इसमें बढ़ोत्तरी होती है।

अल्लाह तआला का इरशाद है:

"अल्लाह तआला सूद को घटाता है और सदक़ात (दान) को बढ़ाता है।" (बक़रा: 276)

ज़कात अदा न करने पर वईदें:

जिस तरह ज़कात की बेशुमार फ़ज़ीलत बयान की गयीं हैं उसी तरह अदा न करने पर सख़्त से सख़्त अज़ाब की वईद भी सुनाई गयी है। और ऐसा क्यों न हो कि ज़कात इस्लाम के अहम अरकान में से है, चुनान्चे क़र्ज़ होने के बावजूद ज़कात की अदायगी न करने वालों के बारे में कुरआन मजीद में यह वईद इरशाद फ़रमायी गयी है: "और जो लोग भी सोना–चांदी जमा करके रखते हैं और अल्लाह के रास्ते में (ज़कात निकालकर) उसको ख़र्च नहीं करते तो उनको दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दीजिए। जिस दिन उसको जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उससे उनके पेशानियों और पहलुओं और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा, यही है ना जो तुमने जमा करके रखा था, बस जो भी तुम जमा करके रखते थे अब उसका मज़ा चखो।"

हदीसों में भी कसरत से यह मज़मून आया है कि हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 फ़रमाते हैं कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमाया: जिसको अल्लाह तआला ने माल से नवाज़ा है और वह ज़कात नहीं अदा करता है तो क़यामत के दिन उसका माल गंजे अज़दहा की शक्ल में बना दिया जायेगा, फिर वह उसके जबड़े पकड़ लेगा और कहेगा: मैं हूं तुम्हारा माल, मैं हूं तुम्हारा खज़ाना, फिर रसूलुल्लाह स0अ0 ने यह आयत तिलावत फ़रमायी:

"जो लोग अल्लाह के दिये हुए माल में कंजूसी करते

हैं वह यह न सोचें कि यह उनके लिये बेहतर है, बल्कि यह उनके लिये बहुत बुरा है। जिस माल में उन्होंने कंजूसी की है वह क़यामत के दिन उनकी गर्दन में लपेट दिया जायेगा।" (सूरह तौबाः 18)

ज़कात किस पर फ़र्ज़ हैः

ज़कात फ़र्ज़ होने के लिये शर्त यह है कि निम्नलिखित बातें पायी जा रही हों। अगर यह बातें न पायी जा रही हों तो ज़कात फ़र्ज़ नहीं होगी।

1– आज़ाद हो, अतः ग़ुलाम पर या बांदी पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं है।

2– मुसलमान हो, दूसरी इबादतों की तरह काफ़िरों से भी ज़कात की मांग नहीं की जाएगी।

3– बालिग़ हो, अतः नाबालिग़ पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं होगी।

4– अक़्ल वाला हो, अतः पागल और मजनू पर ज़कात वाजिब नहीं है।

ज़कात वाजिब होने की शर्तेः

निम्नलिखित बातों के पाये जाने के बाद ज़कात तभी फ़र्ज़ होगी जब निम्नलिखित शर्तें पायी जाएं।

1– माल ज़कात के निसाब को पहुंच रहा हो, अगर उससे कम हो तो ज़कात वाजिब नहीं होगी। निसाब ऊंट, बकरी, गाय इत्यादि का अलग है और सोने चांदी का अलग। तफ़सील बाद में आएगी लेकिन सोने का निसाब लगभग 87 ग्राम सोना और चांदी का 612 ग्राम चांदी है।

2– माल पूरी तरह से मिल्कियत में हो। पूरी तरह से मिल्कियत में होने का मतलब यह है कि वह माल का मालिक भी हो और माल उसके क़ब्ज़े में भी हो। लिहाज़ा जो माल उसके क़ब्ज़े में न हो उसकी ज़कात वाजिब नहीं होती।

3– माल उसकी हाजत–ए–अस्लिया से ज़्यादा हो। जो माल उसकी रोज़मर्रा की ज़रूरत में लगा हो उसकी ज़कात नहीं वाजिब होगी। जैसे रिहाइशी मकान, इस्तेमाल किये जाने वाले कपड़े, घर का फ़र्नीचर, और इस्तेमाल में लायी जाने वाली गाड़ियां। इसलिए उन चीज़ों पर ज़कात वाजिब नहीं है।

4– निसाब क़र्ज़ से ख़ाली हो, अगर कोई क़र्ज़दार है तो क़र्ज़ के बराबर माल पर ज़कात वाजिब नहीं होगी। क़र्ज़ अदा करने बाद अगर बच जाने वाला माल निसाब से कम हो तो ज़कात ही साकित हो जाएगी, अगर क़र्ज़ अदा करने के बाद भी बच जाने वाला माल निसाब को पहुंच रहा हो तो उस बाक़ी माल की ज़कात वाजिब होगी।

5– माल नामी हो यानि माल में बढ़ने की सलाहियत हो। सोने चांदी में यह सलाहियत ख़ल्क़ी तौर पर मानी जाती है। लिहाज़ा सोने–चांदी में हर हालत में ज़कात वाजिब होगी चाहे उनकी तिजारत की जा रही हो या ज़ेवरात की शक्ल में हों या डले की शक्ल में हों, रूपये–पैसे भी सोने–चांदी के हुक्म में हैं।

बाक़ी माल में ज़कात तभी वाजिब होगी जब तिजारत वग़ैरह में उनको लगाया गया हो। (हिन्दिया)

6– माल पर साल गुज़र जाए, इसलिए कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 फ़रमाते हैं कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः जो शख़्स माल हासिल करे, तो उस पर ज़कात नहीं होगी, यहां तक कि हौलाने हौल हासिल हो जाए। (तिरमिज़ी)

और साल गुज़रने में क़मरी साल का एतबार किया जायेगा, शम्सी साल का एतबार नहीं किया जाएगा।

यह भी ख़्याल रहे बीच साल में अगर माल ज़कात के निसाब से कम हो जाए, लेकिन शुरू और आख़िर साल में मुकम्मल रहे तो ज़कात वाजिब होगी। दरमियान में निसाब के घट जाने का कोई एतबार नहीं होगा। अगर साल के शुरूआत के वक़्त साहिबे निसाब था तो और दरमियान साल में माल में इज़ाफ़ा हुआ तो साल के आख़िर में उस पूरे इज़ाफ़ी माल पर ज़कात वाजिब होगी। हर एक पर साल पूरे होने का इन्तिज़ार नहीं किया जाएगा। (हिन्दिया)

ज़कात अदा करने में जल्दी करनी चाहियेः

जब किसी शख़्स पर ज़कात वाजिब होगी और तमाम शर्तें पूरी हो गयीं, निसाब पर साल गुज़र गया तो ज़कात तुरन्त अदा करनी चाहिये। अगर बिना किसी वजह के अदा करने में देर की तो गुनाहगार होगा। इसलिए कि सही क़ौल के मुताबिक़ ज़कात तुरन्त अदा करना वाजिब है। (हिन्दिया)

अलबत्ता अगर कोई साहिबे निसाब है तो माल पर साल गुज़रने से पहले अदा कर सकता है। इसी तरह अगर कोई शख़्स चाहता है कि वह ज़कात रमज़ानुल मुबारक में अदा करे और उसका साल दरमियान के ही किसी महीने में पूरा हो जाता है तो वह सवाब हासिल करने के लिये देर नहीं कर सकता।

.....(शेष पेज 15 पर)

फ़िरऔन का अन्जाम

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

फ़िरऔन का ज़ुल्म व सितम जब हद से बढ़ा तो हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह के हुक्म से अपनी पूरी क़ौम को लेकर चल दिये और अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल के लिये समन्दर फाड़ दिये जिससे आसानी के साथ वह समन्दर पार कर गये। इतिहासकारों के अनुसार उस वक़्त बनी इस्राईल की संख्यां लाखों में थी। छ लाख की संख्या बतायी जाती है। मिस्र में इनके क़याम की मुद्दत चार सौ साल के क़रीब बयान की जाती है।

हज़रत यूसुफ़ (अलैहिस्सलाम) सबसे पहले मिस्र तश्रीफ़ लाये। फिर ज़मामे सल्तनत आपके हाथ में आयी तो आपने अपने तमाम अहले ख़ानदान को वहीं बुलाया। हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) ख़ुद और आपकी पूरी औलाद वहीं मुन्तक़िल हुई। मोअर्रिख़ीन के मुताबिक़ हज़रत याकूब (अलैहिस्सलाम) आख़िरी उम्र में शाम तश्रीफ़ ले गये और वहीं इन्तिक़ाल फ़रमाया लेकिन आपकी ज़ुर्रियत मिस्र में मुक़ीम रही। वहीं आपकी नस्ल फली–फूली। यहां तक कि चार सौ साल के बाद उनकी तादाद छ लाख के क़रीब पहुंच गयी। इसी तादाद ने फ़िरऔन की नींद उड़ा दी थी और उसने नस्लकुशी की बदतरीन मिसाल क़ायम करते हुए बनी इस्राईल का जीना दूभर कर दिया।

हज़रत मूसा की बेसत के दो बुनियादी मक़ासिद थे। क़ौमें फ़िरऔन को दावते तौहीद देना और बनी इस्राईल को अपने अस्ली वतन यानि शाम ले जाना। फ़िरऔन अपनी क़ौम के साथ इस्लाम क़ुबूल कर लेता तो ऐन मुमकिन था कि उसी की हुकूमत बरक़रार रहने दी जाती और बनी इस्राईल निहायत ख़ुशगवार तरीक़े से वहां से रुख़्सत होते या फिर मिस्र ही में उनका क़याम तवील हो जाता और आपसी सहयोग पर मुबनी एक इस्लामी हुकूमत वजूद में आती लेकिन ऐसा न हो सका। फ़िरऔन ने हज़रत मूसा को क़ौमी हरीफ़ या वतनी दुश्मन की नज़र से देखा इसलिए आपको ज़ेर करने की तमाम तर कोशिशें कर डालीं। जब सबमें नाकामी हुई तो हसद की आग में जलने लगा और यह तय कर लिया कि बनी इस्राईल को किसी भी सूरत में यहां से जाने न दिया जाए। चाहे पूरी क़ौम को मौत के घाट उतारना पड़ जाए।

दूसरी तरफ़ हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पूरी राज़दारी के साथ चुपके–चुपके तैयारी कर रहे थे। यहां फ़िरऔन के सिपाहियों को उसकी कानोकान ख़बर न हो सकी। इसी तरह एक रात आप अपनी पूरी क़ौम को लेकर निकल पड़े। फ़िरऔन को ख़बर बाद में हुई और वह अपनी ज़बरदस्त फ़ौज को लेकर ताक़्कुब में निकल खड़ा हुआ। यहां अल्लाह की तरफ़ से वही आ चुकी थी कि तुम्हारा पीछा किया जायेगा, घबराना नहीं हम तुम्हारे साथ हैं। हज़रत मूसा का इरादा शुमाल की तरफ़ जाकर फिर दाहिनी तरफ़ मश्रिक़ी जानिब मुड़ने का था ताकि ख़ुश्की के रास्ते ही अपनी आबाई ज़मीन फ़िलिस्तीन पहुंच जाएं। लेकिन रात की वजह से सही रुख़ मालूम न हो सका और वक़्त से पहले ही दाहिनी तरफ़ मुड़ गये अब सुबह हुई तो देखा कि सामने बहरे कुलज़ुम ठाठे मार रहा है, जिसे पार करके आप वादिये सीना में पहुंच जाते। अब दोबारा सही सिम्त अख़्तियार करना मुमकिन न रहा। पीछे फ़िरऔन की फ़ौज पीछा कर रही थी। बनी इस्राईल चीख़ उठे। फ़िरऔन का लश्कर दूर से नज़र भी आने लगा। कहने लगे हम धरे गये। फ़िरऔनी लश्कर अब पहुंचा कि तब पहुंचा। जब बेबसी इन्तिहा को पहुंची तो क़ुदरते इलाही ने अपना काम दिखाया। इरशाद हुआ अपनी लाठी समन्दर पर दे मारो, कहां ठाठे मारता हुआ ताहद निगाह तक फैला हुआ समन्दर, कहां दो–तीन फ़िट की एक मामूली लाठी लेकिन अस्ल ताक़त हुक्मे इलाही की थी जो काम कर गयी। हज़रत मूसा ने लाठी

दे मारी। समन्दर फटना शुरू हुआ। तेज़ व तुन्द मौजें जो सामने बढ़ी आ रही थीं अब दो तरफ़ सिमटनी शुरू हुईं, जैसे किसी अज़ीम शख़्सियत के इस्तिक़बाल के लिये मजमा छट जाता है और लोग दूर हो जाते हैं। समन्दर को रास्ता देना पड़ा। जिसके साथ अल्लाह की मदद होती है उस पर फिर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता। अगर अल्लाह तुम्हारी नुसरत करे तो फिर कोई ग़ालिब नहीं आ सकता।

और अल्लाह का मामला कभी कभी यह होता है कि बेचारगी और बेबसी की इन्तिहा पर पहुंचाकर फिर अपनी तरफ़ से मदद उतारता है ताकि कमज़ोर इन्सान यक़ीन कर ले कि अल्लाह की ताक़त से बढ़कर कुछ नहीं। अम्बिया तक के साथ यह मामला हुआ है। सख़्ती व तंगी ने उनको आ लिया और वह इस क़द्र झिंझोड़ कर रख दिये गये कि रसूल और उनके साथ वाले अहले ईमान पुकार उठे कि आख़िर अल्लाह की मदद कब आयेगी। सुन लो अल्लाह की मदद बहुत क़रीब है। हज़रत मूसा ने पूरे यक़ीन के साथ यह बात इरशाद फ़रमायी। हरगिज़ नहीं मेरे साथ मेरा रब वह मुझे मंज़िल दिखायेगा और मंज़िले मक़सूद तक पहुंचायेगा। जैसे ही असा मारा समन्दर फटना शुरू हुआ और दोनों तरफ़ से पानी की दीवार खड़ी हो गयी जो अपनी ऊंचाई में पहाड़ की तरह लग रही थी। हुक्मे इलाही का पाबन्द समन्दर साक़ित व जामिद खड़ा रहा। मजाल है कि पानी का एक छींटा भी इधर से उधर जाए। अल्लाह ने समन्दरों को इन्सानों के लिये मुसख़्ख़र कर दिया है। वह इसका सीना चीरते हुए सफ़र करता है और अपने लिये फ़वाएद हासिल करता है। लेकिन समन्दर की तस्ख़ीर का यह रंग शायद इन्सानी तारीख़ में एक ही बार पेश आया हो। हज़रत मूसा पूरे इत्मिनान के साथ समन्दर पर उतर गये। पूरी क़ौम हमराह थी। फ़िरऔन के ज़ुल्म से नजात मिली और बनी इस्राईल ने चैन की सांस ली। फ़िरऔन ने इतना बड़ा मोजज़ा देखा। एक आम अक़्ल रखने वाला भी समझ सकता है कि यह क़ुदरते इलाही का नमूना है उसके लिये इसमे दाख़िल होना बराहे रास्त अल्लाह की क़ुदरत से लड़ाई मोल लेना समझा जाएगा। चाहता तो वापस पलट सकता था लेकिन हसद की आग अक़्ल व फ़हम को भी जला डालती है। पूरी फ़ौज को लेकर समन्दर में कूद पड़ा। अब साकित पानी को हुक्म हुआ कि एक दूसरे से आ मिले। इज़्तराब व तमूज की जो कैफ़ियत थमी हुई थी एकबारगी उसमें हरकत पैदा होने लगी। अब सबने लाख जतन किये कि किसी न किसी तरह निकल लें लेकिन वादा–ए–इलाही पूरा होकर रहा। फ़िरऔन को डूबना था वह डूब मरा। हज़रत मूसा को सही सलामत निकलना था वह निकल गये। वरना कुछ घंटे पहले की कैफ़ियत दूसरी थी। जो अल्लाह चाहता है वही होता है। इस लश्कर को तो डूबना ही है। बनी इस्राईल उस पार पहुंच कर खुली आंखों से उसका मुशाहदा कर रहे थे। बज़ाहिर यही मालूम होता है कि बहुत दूर तक फ़िरऔनियों को भी रास्ता मिला होगा कि यहां तक कि वह दूसरे किनारे से क़रीब पहुंचे तो क़ुदरत के एक इशारे पर समन्द ने सबको निगलना शुरू किया होगा। इस तरह ज़ुल्म व सितम में पिसी हुई क़ौम की नजात के साथ साथ उनकी निगाहों ठन्डी करने का सामान भी किया गया और बहरे अहमर की मौजों में फ़िरऔन का ख़ूनी इक़्तिदार हमेशा के लिये डूब गया। बाज़ हज़रात ने इस मोज़ज़े की भी ज़ाहिरी तावील करने की कोशिश की है लेकिन यह ख़्वाहमख़्वाह की तावीलात हैं। क़ुदरते इलाही को तस्लीम करने के बाद फिर इस तरह की तावीलात बिला ज़रूरत फ़िज़ूल काम कहे जाएंगे।

बनी इस्राईल के इन वाक़्यात से अहले ईमान को भी दर्स है कि हालात चाहे जिस क़द्र नासाज़गार हों, अल्लाह पर भरोसा रखा जाए उसी से सच्ची वाबस्तगी को अपने तमाम मसाएल का दायमी हल क़रार दिया जाए।

शेष: ज़कात का महत्व और उसके कुछ मसले

अलबत्ता सवाब हासिल करने का ज़रिया यह हो सकता है कि जब वह निसाब का मालिक हो गया तो साल पूरा होने से पहले ही रमज़ान में ज़कात अदा कर दे। (हिन्दिया)

अतः हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत अब्बास रज़ि0 ने रसूलुल्लाह स0अ0 से साल पूरा होने से पहले ज़कात अदा करने की इजाज़त मांगी तो आपने इजाज़त दे दी। (अबूदाऊद, इब्ने माजा, तिरमिज़ी)

मीडिया का गिरता स्तर लोकतन्त्र के लिये ख़तरा

जनाब मुहम्मद अब्बास

हमारा देश दुनिया का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। लोकतन्त्र जिन स्तम्भों पर स्थापित है, उनमें प्रेस और मीडिया को बहुत ही महत्वपूर्ण एवं मज़बूत स्तम्भ माना जाता है। इसीलिए लोकतान्त्रिक देशों में मीडिया की ज़िम्मेदारी बहुत ही विशेष व महत्वपूर्ण होती है। इस क्रम में सरकार की विभिन्न पॉलिसियों को लोगों तक पहुंचाने में मीडिया का अपना एक ख़ास व अहम रोल होता है, जबकि दूसरी ओर जनता की समस्याओं, कठिनाइयों और आवश्यकताओं को सरकार तक पहुंचाने में भी मीडिया अहम रोल निभाता है या यूं कह लें कि मीडिया, जनता और सरकार के बीच एक पुल का काम करता है। लोकतान्त्रिक देशों में सरकार के पक्ष में या विपक्ष में जनता की राय बनाने में भी मीडिया का अहम रोल होता है। लोकतान्त्रिक देश में कार्यरत एक मीडिया हमेशा देश की जनता से संबंधित दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं को सरकार के सामने न केवल उजागर करता है बल्कि उनका हल निकालने में सरकार का सहयोग व मार्गदर्शन भी करता है। पिछले कुछ महीने से हमारे देश के छोटे–बड़े व्यापारी जिस प्रकार से जी.एस.टी. की रिटर्न भरने जैसी पेचीदा समस्या के संबंध से परेशानियों का सामना कर रहे हैं, उनको देखकर यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि क्या उनके दुख–दर्द को सरकार तक पहुंचाने वाला कोई मसीहा रूपी मीडिया है?इसी तरह गिरती जी.डी.पी. और पेट्रोल, डीज़ल की क़ीमतों में होने वाली बढ़ोत्तरी से बढ़ती मंहगाई से बेहाल, ग़रीब जनता की भी ख़बर लेने वाला कोई नज़र नहीं आता और नवजवानों में बढ़ रही बेरोज़गारी और जैसी कितनी ही समस्याएं हैं जिन पर ख़बरें व चर्चा अधिकांश न्यूज़ चैनलों के कैनवस से ग़ायब नज़र आते हैं।

इस समय देश की मीडिया के जो हालात हैं वे अत्यधिक शोचनीय हैं। इस पर सितम यह कि आज हमारा मीडिया अपना वह कर्तव्य नहीं निभा पा रहा जो उसके मूलभूत कर्तव्यों में से एक है। मीडिया विशेषज्ञ यह महसूस करते हैं कि महत्वपूर्ण मुद्दों से ध्यान हटाने के लिये किसी न किसी हद तक मीडिया को मैनेज किया जाता है। इसके अतिरिक्त अंग्रेज़ी न्यूज़ चैनलों और हिन्दी न्यूज़ चैनलों में की ख़बरों में अन्तर पाया जाता है। जिन मुद्दों पर बहुत ज़ोर–शोर से हिन्दी न्यूज़ चैनलों पर बहस दिखाई जाती हैं, वे मुद्दे अंग्रेज़ी चैनलों में एकदम ग़ायब होते हैं। इससे इस बात को भी बल मिलता है कि हिन्दी व अंग्रेज़ी दर्शकों की सोच में काफ़ी अन्तर है। वर्तमान समय में इलेक्ट्रानिक मीडिया या अपनी टी.आर.पी. बढ़ाने की होड़ के कारण अच्छी–बुरी ख़बरों में अन्तर करने के बजाय ख़बरों को मिर्च–मसाला लगाकर और अधिक से अधिक सनसनीखेज़ बनाकर पेश करता है, चाहे उन ख़बरों का समाज पर कितना ही नकारात्मक प्रभाव पड़े। मीडिया जानबूझकर या अनजाने में समाज की ज़मीनी वास्तविकता या लोगों के अस्ल दुख–दर्द को दिखाने से परहेज़ करता हुआ दिखाई देता है। यही कारण है कि पिछले कई बरसों के अवलोकन से यह बात सामने आयी है कि एक–दो न्यूज़ चैनलों को छोड़कर बाक़ी के सभी न्यूज़ चैनल ख़बरें दिखाने के नाम पर जनता से मज़ाक़ कर रहे हैं। जैसी वाहियात क़िस्म की और बिना सर–पैर की ख़बरें और चर्चाएं (डिबेट) उन चैनलों पर सनसनीखेज़ बनाकर ऐंकरों की भरपूर अदाकारी के साथ पेश किये जाते हैं। इस कारण से जनता के जीवन से संबंधित वास्तविक मुद्दे पर्दे के पीछे चले जाते हैं।

पिछले कुछ महीनों का ही यदि हम अवलोकन करें तो अधिकतर न्यूज़ चैनल ख़बरों के नाम पर जनता व लोकतन्त्र की धज्जियां उड़ाते नज़र आते हैं। 25 अगस्त से लगातार जिस प्रकार गुरमीत बाबा राम–रहीम और हनीप्रीत के क़िस्से–कहानियों पर ब्रेकिंग न्यूज़ बनाकर प्रस्तुत कर रहे हैं और जिस प्रकार व्यवहारिक स्तर की सभी सीमाएं लांघी जा चुकी हैं, वह स्वयं में एक उदाहरण है। कुछ ख़बरे तो इतनी अव्यवहारिक थीं कि परिवार के साथ बैठकर देखना भी मुश्किल था और

शायद ऐसी पत्रकारिता की मिसाल देना भी मुश्किल है। देखा जाये तो देश की ग़रीब व बेरोज़गार जनता को भला बाबा राम–रहीम या हनीप्रीत की कहानियों से क्या लाभ हो सकता है?बाबा राम–रहीम का हनीप्रीत से क्या रिश्ता है?.....या जेल में बाबा के दिन–रात कैसे कट रहे हैं?.....या सलमान ख़ान शादी कब करेगा?..... ऐसी ख़बरों से भला देश में दो वक़्त का खाना जुटाने में व्यस्त ग़रीबों का क्या सरोकार हो सकता है?ऐसी ख़बरों से देश व क़ौम का क्या भला हो सकता है?

जब भी किसी बर्निंग स्कैन्डल या मुद्दे से ध्यान हटाना हो तो एक वर्ग के किसी ग़ैरज़िम्मेदार व्यक्ति की ओर से दूसरे वर्ग के ख़िलाफ़ ऐसा भड़काऊ बयान दाग़ दिया जाता है जिस पर देश के दोनों वर्गों के मासूम लोग दांत पीस कर रह जाते हैं जबकि बड़े स्कैन्डल्स या इशूज़ को पर्दे के पीछे डालकर हमेशा के लिये दबा दिया जाता है, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिय। मीडिया को समूचे देश के हालात का आइना बनना चाहिये।

यदि हम देशवासी सही अर्थों में देश उन्नतिशील व प्रगतिशील बनाना चाहते हैं तो हम लोगों को अपनी सोच व नज़रिये में बदलाव लाना होगा। हमें ऐसे न्यूज़ चैनलों से अच्छी, उच्चस्तरीय और समाज को सही दिशा दिखाने वाली ख़बरों की मांग करनी चाहिये। यदि फिर भी कुछ तथाकथित न्यूज़ चैनल नफ़रत फैलाने वाली ख़बरों के द्वारा जनता का वैचारिक शोषण करने से बाज़ नहीं आते तो उनका बायकाट करना चाहिये।

देश की मीडिया से जुड़े हर छोटे–बड़े ज़िम्मेदारों का यह कर्तव्य है कि वे अपने सभी निजी उद्देश्यों को ताक़ पर रखते हुए जनता व लोकतन्त्र की सुरक्षा के लिये पुख़्ता सबूतों पर आधारित सच्ची पत्रकारिता करें। जहां तक हो सके, धर्म व साम्प्रदायिकता के नाम पर नफ़रत फैलाने वाली और जनता को बांटने वाली ख़बरों को पेश करने से बचें। इस देश की गंगा–जमुनी सभ्यता और आपसी प्रेम व सौहार्द को बढ़ावा देने वाली, समाज में अच्छाई को बढ़ावा देने वाली ख़बरों को अधिक से अधिक प्रकाशित करें। निसंदेह इसी में देश व क़ौम और हम सबकी भलाई व उन्नति का राज़ छिपा हुआ है।

शेषः अपने अन्दर बदलाव लाने की चिन्ता कीजिए!

.....नबियों ने आकर उनका उपचार किया है और सबसे अन्त में अन्तिम संदेष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लाहुअलैहि वसल्लम पधारे और बिगड़ी हुई मानवता के दर्द को दूर किया और मानवता को तबाही से बचाया। रसूलुल्लाह स0अ0 के इस दुनिया से जाने के बाद उनकी शिक्षाओं की पैरवी करने वाले पैरोकार हैं और उनकी दावत देते कि मानवता उसी समय सफलता को पा सकती है जब इन शिक्षाओं व नियमों पर कार्यरत हो। किन्तु अफ़सोस यह है कि मनुष्य की प्रकृति इतनी बिगड़ चुकी है कि आग में जलने वाले इस युग के मनुष्य को भलाई की ओर बुलाने वाले उन भले लोगो पर ही गुस्सा आ रहा है और उनको रूढ़िवादी होने और धार्मिक रूप से कट्टर होने का ताना देकर उनकी आवाज़ को प्रभावहीन कर रहा है।

दुनिया का कौन पढ़ा–लिखा इनसान है जिसके सामने सुबह उठते ही हमारे आज के समाज व सोसाइटी की एक झलक न नज़र आती हो। कितने ऐसे मनुष्य हैं जो इस झलक को देखकर तड़प उठते हों, बेचैन हो जाते हों, मानवता के इस ख़ूनी पहलू को देखकर यदि कोई तड़पता और बेचैन होता है तो वही लोग जिनको धार्मिक जुनूनी होने व रूढ़िवादी होने का ताना दिया जाता है। दुनिया में और हमारे देश में जगह–जगह जीवन बीमा कराने की कम्पनी स्थापित हो रही है किन्तु कितने हैं जो जीवन को सुरक्षित करते हैं?हाँ, मर जाने पर बीमे की धनराशि दे देते हैं। किन्तु जिन शिक्षाओं के द्वारा वास्तविक जीवन का बीमा होता है उनको मानने के लिये कोई तैयार नहीं है। बल्कि उनका मज़ाक़ उड़ाया जाता है। उसको कमतर समझा जाता है। हमारा पढ़ा–लिखा वर्ग कुछ तो सोचे कि क्या हो रहा है?इनसान कहां जा रहा है?जो आज सुरक्षित है क्या वह कल भी सुरक्षित रहेगा?हालात जिस तेज़ी के साथ बदल रहे हैं यदि उनके रुख़ को न मोड़ा गया, उसको बदलने की चिन्ता न की गयी तो कुछ ही सालों में इनसानी आबादी आपस में इस तेज़ी से टकराएगी कि सुनामी भी उसके सामने मात खा जाएगी।

वादा निभाना

यहां हम जगनायक मुहम्मद (स0अ0) की दोस्तों और दुश्मनों के साथ वफ़ादारी और वादा निभाने के विषय पर चर्चा करेंगे। वफ़ा व वादा निभाना श्रेष्ठ व्यवहारिकता का आधार है जिससे जीवन व्यवस्था स्थापित रहती है। वो शराफ़त व इन्सानियत के मापक और व्यक्ति व क़ौमों की श्रेष्ठता का स्तर व तुला हैं कि अगर लोग इसकी पाबन्दी करें तो उन्हें सफ़लता प्राप्त हो।

वफ़ादारी, वफ़ादार शख़्स के दिल में ऐसी खुशी पैदा करती है जिसकी कोई हद नहीं होती और जिससे वफ़ा की जाये उसके दिल में भी एहसान व मुरव्वत और नेकी के जज़्बात पैदा करती है और वफ़ादार क़ौमों से दोस्ती और संधियां की जाती हैं और उन्हें निभाया जाता है।

आज की परेशान दुनिया जिसमें हम रह रहे हैं उसकी परेशानी का कारण यही बेवफ़ाई है। जब एक पक्ष को दूसरे पक्ष के वादे का एतबार न हो तो दूसरे को भी कैसे एतबार आयेगा और दूसरे को बदगुमानी और ख़ौफ़ से कैसे बचाएगा।

अगर वादा निभाने को वो अहमियत दी जाती जो रसूलुल्लाह (स0अ0) की मन्शा थी तो दुनिया मक्कारी व फ़रेब, वादाख़िलाफ़ी व बेईमानी की इस पस्ती में न होती। इसी तरह अगर मुसलमान रसूलुल्लाह (स0अ0) का तरीक़ा अपनाते और दूसरे लोग उनकी पैरवी करते तो अन्तर्राष्ट्रीय संबंध मज़बूत बुनियादों पर क़ायम होते जो शांति व न्याय और मानवता के सम्मान की ज़मानत होते। हम आपके सामने कुछ मिसालें पेश करेंगे ताकि आप वफ़ादारी की कुछ अद्भुत तस्वीरें देख सकें।

सुलह हुदैबिया से एक साल पहले कुरैश ने मदीना का घेराव कर लिया था और पास–पड़ोस के क़बीलों और लोगों को जमा कर रखा था। इसी बीच में बनू कुरैज़ा ने रसूलुल्लाह (स0अ0) से अपनी संधि तोड़ दी जिससे बड़ी मुश्किल पैदा हो गयी और मुसलमान बहुत आज़माइश में पड़ गये मगर अल्लाह तआला ने अपने बन्दे की मदद की और उसकी फ़ौज को हावी कर दिया और मुश्रिकीन के दिलों में रोब व डर डाल दिया और थोड़े ही अर्से में इस्लामी लश्कर रसूलुल्लाह (स0अ0) के नेतृत्व में मक्का की ओर बढ़ रहा था, जहां वो हुदैबिया में उतरा तो कुरैश ने उनके पास अपने प्रतिनिधी भेजे, कुरैश के प्रतिनिधी अरवा इब्ने मसऊदुल सक़फ़ी ने वहां से लौट कर मुहम्मद (स0अ0) और मुहम्मद (स0अ0) के सहाबा का ये हाल बयान किया कि, "मैं क़ैसर व किसरा और नजाशी के मुल्कों में गया हूं मगर ख़ुदा की क़सम! मैंने किसी बादशाह को अपने देश में इतना लोकप्रिय नहीं देखा जितना कि मुहम्मद (स0अ0) अपने सहाबा के बीच में दिखाई दिये।"(1)

मुहम्मद (स0अ0) उस समय ताक़त व वर्चस्व के मालिक थे मगर आप (स0अ0) ने ऐलान किया कि वो जंग नहीं चाहते हैं बल्कि कुरैश अगर मुझसे सिलारहमी की संधि चाहते हैं तो मैं उनकी इच्छा पूरी करूंगा।

सुहैल इब्ने अम्र सुलह करने के लिये कुरैश की तरफ़ से आये जिसके तहत मुहम्मद (स0अ0) और उनके सहाबा को मक्का से वापस जाना था। इस संधि में एक शर्त ज़्यादती पर भी आधारित थी कि मुहम्मद (स0अ0) के पास मक्के से जो मुसलमान जायेगा तो वो उसे कुरैश को बग़ैर उसके वली की इजाज़त के सुपुर्द कर देंगे, मगर कुरैश से अपने किसी आदमी की वापसी की मांग नहीं करेंगे।

इस नामुनासिब शर्त ने मुहम्मद (स0अ0) के सहाबा को बहुत परेशानी में डाल दिया यहां तक कि हज़रत उमर (रज़ि0) कभी हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) के पास जाते और कभी रसूलुल्लाह (स0अ0) के पास जाकर ये शिकायत करते क्या हम मुसलमान और वो मुशरिक नहीं हैं?और आप (स0अ0) क्या अल्लाह के रसूल नहीं हैं?तो फिर हम ही क्यूं अपने दीन को कमज़ोर दिखा रहे हैं?इस पर रसूलुल्लाह (स0अ0) फ़रमाते कि मैं अल्लाह का बन्दा और रसूल हूं, मैं हरगिज़ उसके हुक्म के ख़िलाफ़ काम नहीं करूंगा, और वो मुझे कदापि नष्ट नहीं करेगा। अबूबक्र (रज़ि0) कहते हैं कि मैं गवाही देता

हूं कि वो अल्लाह के रसूल हैं। मुसलमानों का इस शर्त का मानना ऐसी चीज़ का मानना था जिसकी वजह उनको मालूम नहीं थी इसलिये ये उनके सब्र का बड़ा इम्तिहान था। मुसलमान इसी बेचैनी में थे और रसूलुल्लाह (स0अ0) कुरैश के प्रतिनिधी सुहैल इब्ने अम्र से संधि समाप्त ही कर चुके थे जो अभी भी लिखी नहीं गयी थी कि इसी बीच में अबू जन्दल (रज़ि0) बेड़ियों में जकड़े हुए और फ़रियाद करते हुए आये।

ये अबू जन्दल (रज़ि0) सुहैल इब्ने अम्र के लड़के थे जो मुशरिकीन से भागकर मुसलमानों के पास आये थे। सुहैल ने जब अपने लड़के को देखा तो उठकर उसका गिरेबान पकड़ लिया और रसूलुल्लाह (स0अ0) से कहने लगा कि हम इसके आने से पहले ही इस बात की संधि कर चुके थे। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया तुम सच कहते हो इस पर अबूजिन्दल (रज़ि0) फ़रियाद करने लगे कि ऐ मुसलमानों! क्या मुझे मुश्रिकों के पास भेज दिया जायेगा, कि वो मेरे दीन की वजह से मेरे ऊपर जुल्म ढायें?यहां मुहम्मद (स0अ0) के अद्वितीय साहस को देखें जिसका मैं ज़िक्र कर चुका हूं और वो उस समय ताक़तवर पोज़ीशन में भी थे कि अपनी फ़ौज लेकर आये थे और आप उरवा इब्ने मसऊद से फ़ौज की जांनिसारी की हालत भी जान चुके हैं। आप ज़रा सोचें कि वो अपने क़रीबी साथियों को बग़ावत के क़रीब देख रहे थे, फिर कुरैश के सम्मानित क़ैदी को देखिये जो बेड़ियों में जकड़ा हुआ सामने खड़ा था, और मुहम्मद (स0अ0) के दीन की वजह से मुसीबत में फंसा था। फिर आप (स0अ0) को देखिये कि संधि जबकि लिखी नहीं गयी थी आप (स0अ0) ने बिना किसी शंका व टालमटोल के सुहैल की बात को स्वीकार कर लिया और अपने साथी को रोकते हुए अपने दुश्मनों को लौटा दिया।(2) आप इन सब बातों को ज़रा सोचिये और अगर संभव हो तो मानव इतिहास से इसका कोई उदाहरण प्रस्तुत कीजिये, जो मुहम्मद (स0अ0) ने अपने अलिखित क़रार की पाबन्दी करके प्रस्तुत किया। बेशक ये वादा निभाने का श्रेष्ठ उदाहरण है।

अल्लाह तआला ने मुहम्मद (स0अ0) को वफ़ा के क़ानून के साथ भेजा था जो संधि को दीन से भी ऊपर रखता था। इसलिये इसमें वादा किये हुए मुश्रिक का दियत (ख़ून का बदला) ज़रूरी है किन्तु बग़ैर वादा किये हुए मुश्रिक की दियत आवश्यक नहीं है। इसी प्रकार संधि वाले मुशरिकीन के ख़िलाफ़ एक मुसलमान दूसरे मुसलमान की मदद नहीं कर सकता, कुरआन में है कि:

"अगर तुमसे मुसलमान दीन के मामले में मदद चाहें तो तुम उनकी मदद करो मगर उस क़ौम के ख़िलाफ़ नहीं जिससे तुम्हारा मुआहिदा (संधि) हो।"

संधिपूर्ति की पाबन्दी का सम्मान और महत्व हमेशा का मार्गदर्शन करता रहेगा। ये तो आप (स0अ0) की वादा निभाने की वो मिसाल थी जो उन मुशरिकीन के साथ थी, जिनसे संधि की गयी थी और अब एक दुश्मन से वफ़ादारी की मिसाल देखिये जो आप (स0अ0) से जंग करते हुए मारा गया था।

मुत्इम इब्ने अदी कुरैश के सम्मानित लोगों में से थे। जब मुहम्मद (स0अ0) ताएफ़ में बनू सक़ीफ़ से तकलीफ़ पाकर मक्का वापस हुए तो आप (स0अ0) ने मक्का के कुछ सरदारों का सहयोग चाहा ताकि आप (स0अ0) वहां इत्मिनान से रह सकें, मगर उन लोगों ने इनकार कर दिया मगर मुत्इम ने आपको अपना सहयोग दिया और उसके बाद बदर में जब कुरैश को हार मिली और उनके कई सरदार मारे गये तो उनमें एक मुत्इम इब्ने अदी भी थे जिनके बारे में शायर–ए–रसूल हस्सान इब्ने साबित (रज़ि0) ने ये मरसिया कहा:

(ऐ मेरी आंख क़ौम के सरदार के लिये रो और अगर आंसू ख़त्म हो चुके हों तो आखों से ख़ून बहा)

(और मशअरीन (अर्थात मुज़दलफ़ा, सफ़ा और मरवा इत्यादि) के अज़ीम इन्सान का मातम कर जिसके लोगों पर ज़िन्दगी भर के एहसान हैं)

(अगर किसी की अज़मत उसे हमेशा बाक़ी रखती तो आज मुत्इम की अज़मत उसे ज़रूर बाक़ी रखती)

हज़रत हस्सान (रज़ि0) ने ये मर्सिया एक मुश्रिक के लिये कहा जो मुहम्मद (स0अ0) और उनके सहाबा से लड़ता हुआ मारा गया और इस मर्सिये को रसूलुल्लाह (स0अ0) भी सुनते थे और मुसलमानों को इसे पढ़ते देखकर खुश होते थे। क्या आपने ऐसा खुला दिल और वफ़ा पसंदी देखी है?आप ने ऐसा महानायक देखा है जो

मर्दान्गी और इन्सानियत की इस बुलन्दी पर पहुंच कर जंग में अपने मुक़ाबले में मरने वाले दुश्मन की मौत पर रोये?बेशक इस वफ़ा की कोई मिसाल नहीं मिलती।

मुश्रिकीन के साथ आप (स0अ0) के वादा निभाने की एक और मिसाल देखिये, हुदैबिया की संधि की शर्तों में ये भी था कि जो चाहे मुहम्मद (स0अ0) की ओर हो जाये और जो चाहे कुरैश की ओर हो तो बनू खुज़ाआ अपने शिर्क के बावजूद मुहम्मद (स0अ0) की ओर आ गये फिर जब कुरैश ने आप (स0अ0) से संधि तोड़ दी और अपने सहयोगी बक्र का साथ दिया तो अम्र इब्ने सालिम खुज़ाई ने अपने सहयोगियों से मदद मांगी और रसूलुल्लाह (स0अ0) के पास आकर जो मस्जिद में तश्रीफ़ फ़रमाते थे, ये पंक्तियां पढीः

(ऐ रब मैं मुहम्मद को अपने और उनके पिता की पुरानी संधि याद दिलाता हूं तो आप मदद कीजिये, अल्लाह आपको तौफ़ीक़ दे और अल्लाह के बन्दों को बुलाइये कि वो मदद को आयें ऐसी बड़ी फ़ौज में जो समुन्द्र की तरह ठाठे मार रही हो, कुरैश ने आप से वादा ख़िलाफ़ी की है और कुरैश ने आप की मज़बूत संधि को तोड़ा है)

तो मुसलमानों के मुश्रिक सहयोगी से वादा ख़िलाफ़ी मक्का की विजय का कारण बनी जिसके लिये रसूलुल्लाह (स0अ0) ने जल्दी से हमले की तैयारी की।

ये मुहम्मद (स0अ0) के वादा निभाने की कुछ मिसालें थीं जो उन्होंने अपने विरोधियों और उनके कुछ एहसानों के बदले में अपनायी थीं और दोस्तों से उनकी वफ़ादारी का तो जितना ज़िक्र किया जाये कम होगा क्योंकि उनकी ज़िन्दगी ही नेकी और वफ़ादारी का दूसरा नाम थी।

अब्दुल्लाह इब्ने अबिल हमा कहते हैं कि मैंने मुहम्मद (स0अ0) को कोई चीज़ बेची और मैंने उनसे वहीं आने का वादा किया जो मुझे तीन दिन बाद याद आया मैंने उन्हें वहीं पाया, उन्होंने मुझे देखकर बस इतना ही कहा कि तुमने मुझे परेशानी में डाल दिया। मैं यहां तीन दिन से तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा हूं। ये जाहिलियत के ज़माने और नबूवत के आने से पहले का वाक़्या है।

हज़रत आयशा (रज़ि0) रिवायत करती हैं कि एक बुढ़िया नबी–ए–अकरम (स0अ0) की ख़िदमत में आयी तो आप (स0अ0) ने पूछा तुम कौन हो?तो उसने बताया कि वो जसामा मुज़निया है। आप (स0अ0) ने फ़रमाया कि तुम हसाना हो! तुम कैसी हो और क्या हाल है, तुम हमारे आने के बाद कैसी रही, तो उसने कहा कि आप पर मेरे मां–बाप कुर्बान हों, अच्छी रही, उसके जाने के बाद मैंने रसूलुल्लाह (स0अ0) से पूछा कि या रसूलुल्लाह! आप (स0अ0) ने बुढ़िया पर बड़ा ध्यान दिया, आप (स0अ0) ने बताया कि वो ख़दीजा के ज़माने से हमारे पास आती थी और अच्छा सुलूक करना ईमान में से है।

हुनैन की जंग के बाद (जिसमें रसूलुल्लाह (स0अ0) साबित क़दम न रहते तो क़बीला–ए–हवाज़ुन इस्लाम का ख़ात्मा कर देते) उसका एक प्रतिनिधि मंडल अपने युद्धबन्दियों की रिहाई के लिये आया मगर आप (स0अ0) की शफ़क़त व रहमत को जगाने वाला कोई कारण उनके पास न था और उनका अतीत भी बिल्कुल अन्धकारमय था। यद्यपि उन्होंने आप (स0अ0) के वफ़ा के भाव में अपने मक़सद को पा लिया और उनमें से एक व्यक्ति कहने लगा कि बन्दी औरतों में आप (स0अ0) की दाइयां और दूध पिलाने वालियां भी हैं और अगर हमने नोमान इब्ने मुन्ज़िर या हारिस इब्ने अबी शमरुलग़सानी को दूध पिलाया होता और ये हादसा पेश आया होता तो हम उससे एहसान या मेहरबानी की उम्मीद रखते। ये सुनकर रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया, मेरे और बनी अब्दुलुत्तलिब के क़ैदी तुम्हारे हैं। इस पर मुहाजिरीन व अन्सार ने कहा जो हमारे क़ैदी हैं वो रसूलुल्लाह (स0अ0) के हैं।(7) इस तरह हवाज़ुन को हज़ारों क़ैदी दे दिये गये, ये उस वफ़ादार शख़्सियत का काम था जिसने अपने दूध के बदले एक ज़ालिम और हारी हुई क़ौम को माफ़ कर दिया तो क्या एहसान फ़रामोश लोग इससे कुछ सबक़ हासिल करेंगे?

इस वाक़्ये को सामने रखकर दुनिया के इतिहास के ज़िन्दा–मुर्दा शासको का निरीक्षण करने के बाद रसूलुल्लाह (स0अ0) को याद कीजिये और उन पर दरूद व सलाम भेजिये।

हुज़ूर–ए–अक़दस (स०अ०) का इरशाद–ए–गिरामी

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फ़रमाया:

"अल्लाह तआला का इरशाद है कि जिस वक़्त मेरा बन्दा मुझे याद करता है और मेरी याद में उसके होंट हिलते हैं उस वक़्त मैं अपने बन्दे के साथ होता हूं।" (बुख़ारी)

ख़ुदा के साथ होने का मतलब यहां ये है कि अल्लाह की रज़ा और उसकी तरफ़ से कुबूलियत उस बन्दे को हासिल हो जाती है वरना ख़ुदा तो हर वक़्त साथ होता है वो किसी से दूर नहीं होता।

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फ़रमाया है:

"जब भी अल्लाह के बन्दे बैठकर अल्लाह का ज़िक्र करते हैं तो फ़रिश्ते हर तरफ़ से उनके पास जमा हो जाते हैं और उनको घेर लेते हैं, और अल्लाह की रहमत उन पर छा जाती है और उनको अपने साये में ले लेती है और उन पर सकीना की कैफ़ियत नाज़िल होती है और अल्लाह अपने मलाइका मक़रबैन में उनका ज़िक्र फ़रमाता है।" (मुस्लिम)

हज़रत उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फ़रमाया:

"अल्लाह के ज़िक्र के बग़ैर ज़्यादा बात न किया करो क्योंकि उससे दिल में सख़्ती पैदा होती है और लोगों में वो आदमी अल्लाह से ज़्यादा दूर है जिसके दिल में सख़्ती हो।" (बुख़ारी)

कौन सा ज़िक्र अफ़ज़ल है

ऊपर की लाइनों से ज़िक्र की फ़ज़ीलत बख़ूबी मालूम हो चुकी है कि इन्सानी दिल को ज़िन्दा व ताबन्दा रखने के लिये अल्लाह की याद से बढ़कर और कोई चीज़ नहीं, अस्ल में तो दिल से याद करना ज़रूरी है, लेकिन दिल से याद करने का आधार अल्लाह के ज़िक्र पर है और ज़बान पर अल्लाह की याद का बड़ा हक़ है, हमारे हुज़ूर (स०अ०) दिन–रात अल्लाह को याद फ़रमाया करते थे और ऐसे कलमे भी इरशाद फ़रमाये हैं जो अल्लाह की याद में बहुत असर रखते हैं। वो ज़िक्र के कलिमे हुज़ूर (स०अ०) की ज़बान–ए–मुबारक से निकले हुए भी हैं और दूसरों को उनकी हिदायत भी फ़रमायी हैं।

हज़रत समुरह बिन जुन्दब (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फ़रमाया तमाम कलिमों में अफ़ज़ल तीन कलिमे बड़ी फ़ज़ीलत रखते हैं: सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दुलिल्लाहि, लाइलाहाइलल्लाहु। (मुस्लिम)

दूसरी जगह इरशाद है:

"उन सारी चीज़ों से जिन पर सूरज उदय हुआ, मुझे ये ज़्यादा महबूब है कि सुब्हानल्लाहि, अल्हम्दुलिल्लाहि, वलाइलाहा इल्लललाहु, वल्लाहु अकबर कहो।"

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 11 NOVEMBER 2018 VOLUME: 10

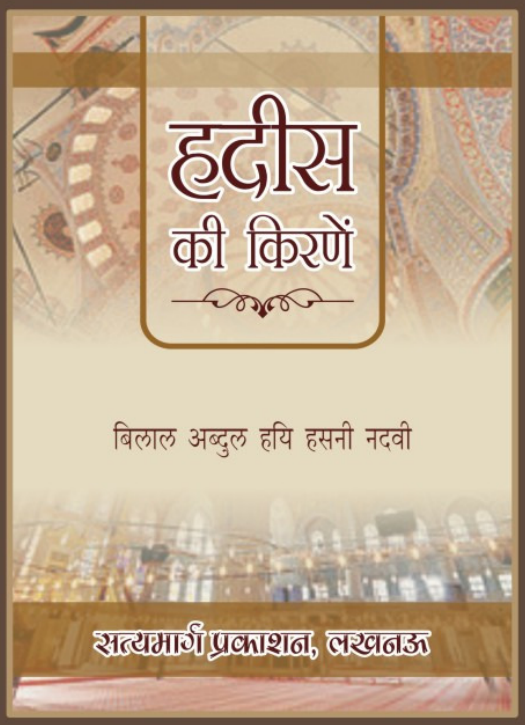

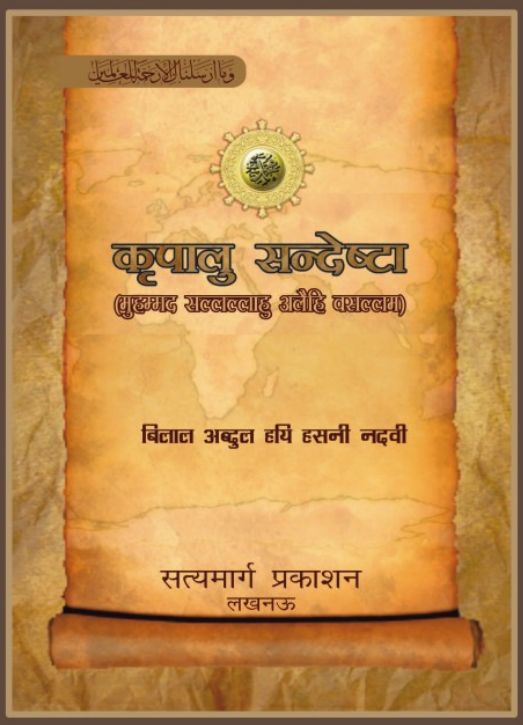

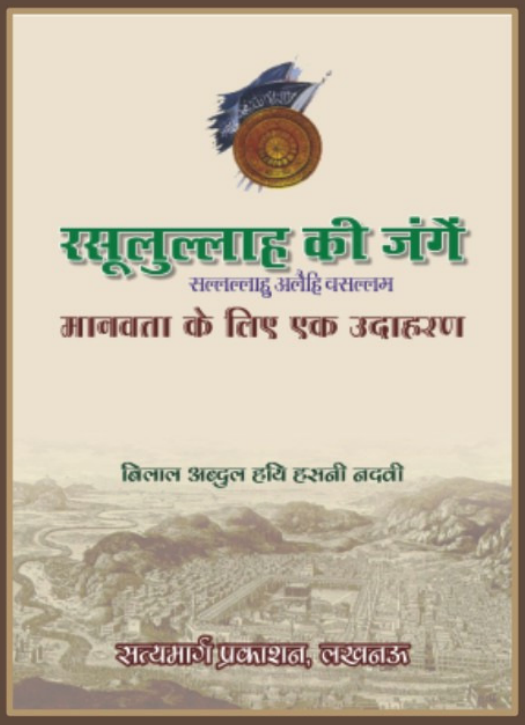

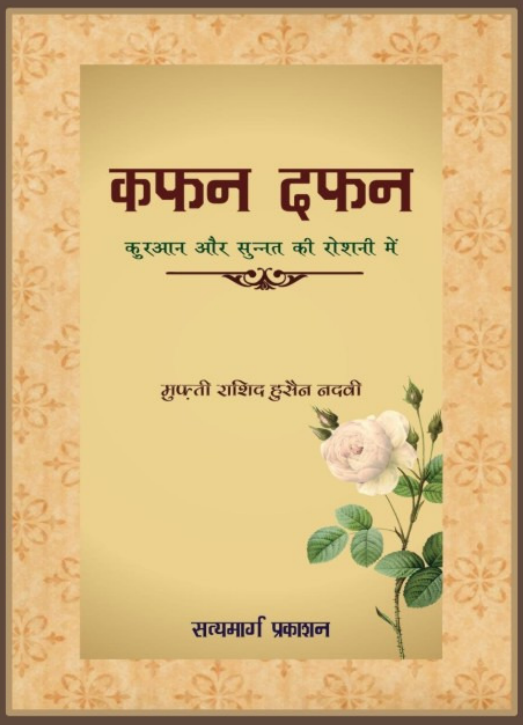

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.